तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

काव्य मंजरी
Kavya Manjari

केन्द्रीय विद्यालय संगठन * Kendriya Vidyalaya Sangathan

काव्य मंजरी

भाग-18

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, नई दिल्ली

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

काव्य मंजरी, भाग-18

शिक्षक दिवस-2024 के उपलक्ष्य में प्रकाशित केन्द्रीय विद्यालय संगठन के शिक्षकों एवं कार्मिकों द्वारा रचित कविताओं का संकलन

संरक्षक: निधि पाण्डे, आयुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन
संपादक: डॉ. पी. देवकुमार, संयुक्त आयुक्त (शै.), के.वि.सं. (मु)
संपादकीय प्रभारी: सचिन राठौर, सहायक संपादक, केन्द्रीय विद्यालय संगठन (मु)
आवरण पृष्ठ: श्रृंखला साहू, टी.जी.टी. (कला) पीएमश्री के.वि. जनकपुरी, दिल्ली

संदेश

'काव्य मंजरी' के 18वें अंक के प्रकाशन पर मेरी शुभकामनाएं। यह संकलन मात्र कविताओं का संग्रह नहीं है, बल्कि इसमें संगठन से जुड़े शिक्षकों एवं कार्मिकों की भावनाओं, विचारों व संवेदनाओं की एक विशिष्ट झलक है, जो इस पुस्तक के माध्यम से अभिव्यक्त हुई हैं। साथ ही, यह केन्द्रीय विद्यालय संगठन का एक प्रयास है, जहां पर हम राजभाषा के प्रयोग से अपने कर्मचारियों में सृजनात्मकता को भी बढ़ावा देते हैं।

केन्द्रीय विद्यालय संगठन के विशाल परिवार में, जहां 13 लाख से अधिक विद्यार्थी और 50 हज़ार से अधिक कार्मिक सम्मिलित हैं, वहां शिक्षा केवल एक प्रक्रिया नहीं, बल्कि एक जीवंत अनुभव है, जिसे हम सभी मिलकर निरंतर महसूस करते हैं। केन्द्रीय विद्यालय संगठन ने सदैव से शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट मानक स्थापित करने का प्रयत्न किया है, साथ ही भारतीय साहित्य, कला और संस्कृति को भी समृद्ध करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। शिक्षकों की रचनात्मकता को प्रेरित करने में संगठन की यह पहल 'काव्य मंजरी' के रूप में प्रतिवर्ष साकार होती है, जो हमारी साहित्यिक परंपराओं को संजोने का एक लघु प्रयास है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस अंक में प्रकाशित कविताएं पाठकों को अवश्य पसंद आएंगी। केन्द्रीय विद्यालय संगठन के इस रचनात्मक प्रयास में कविता लेखन, पृष्ठ सज्जा और संकलन से जुड़े सभी कार्य हमारे कर्मचारियों द्वारा किये गए हैं। उनकी सृजनशीलता हमें गौरवान्वित करती है। मैं इस संकलन को साकार करने वाले सभी रचनाकारों, संपादक मंडल, और चयनकर्ताओं को हार्दिक धन्यवाद और शुभकामनाएं देती हूं। साथ ही, यह आशा करती हूं कि केन्द्रीय विद्यालय संगठन में सृजनात्मकता और साहित्यिक गतिविधियों का यह प्रवाह अनवरत जारी रहेगा।

मंगल कामनाओं सहित,

निधि पाण्डे

निधि पाण्डे
आयुक्त

अनुक्रम

क्र.सं./S.No.	शीर्षक/Title	पृ./Pg.
1	चाहिए ऐसा भारत	1
2	एक दीपक विश्वास का	2
3	जीवन और धैर्य	3
4	क्षमा	4
5	जहाँ चाह, वहाँ राह	5
6	ये जरूरी तो नहीं	6
7	केन्द्रीय विद्यालय है सक्षम	7
8	मैं श्रमिक हूँ	8
9	हिंदी	9
10	कृषक	10
11	एक और स्वरुप- प्रकृति	11
12	दीपक	12
13	माटी तेरे रंग हजार	13
14	हीरक जयंती गीत	14
15	आज़ादी का अमृत महोत्सव	15
16	वृक्ष की व्यथा	16
17	बच्चे हैं देश का भविष्य	17
18	स्वर्ण युग की शुरुआत	18
19	शिक्षा ही जीवन है	19
20	मन के भोले-भाले बच्चे	20
21	नारी तेरा सफर	21

क्र.सं./S.No.	शीर्षक/Title	पृ./Pg.
22	स्वरूप	22
23	कन्या- भ्रूण हत्या	23
24	अनकहे एहसास	24
25	शिक्षा और संघर्ष	25
26	वह नारी है	26
27	निर्भया: एक खोज	27
28	माँ	29
29	बचपन की कहानी	30
30	मन कहता है	31
31	हर बच्चे की इच्छा	32
32	बचपन	33
33	तू बढ़ता चल	34
34	नया संकल्प	35
35	पीढ़ी अंतराल	36
36	विद्यार्थी और शिक्षक	37
37	केन्द्रीय विद्यालय संगठन	38
38	परीक्षा पर चर्चा	39
39	वैज्ञानिक खोजगाथा	40
40	ज्ञान का दीप	41
41	योग	42
42	ऐसा भारत चाहिए	43
43	जब भी स्कूल खुलता हैं	44

क्र.सं./S.No.	शीर्षक/Title	पृ./Pg.
44	सत्यपथ	45
45	नारी	46
46	अपना केन्द्रीय विद्यालय	47
47	एक महाप्रश्न और हल	48
48	जीवन हर पल	49
49	पीएम श्री योजना का स्वागत	50
50	ईमान है, तो है सब कुछ	51
51	चिन्तन की सरगम	52
52	टूटकर आकाश में	53
53	कल भी सूरज निकलेगा	54
54	यह पल गुजरेगा, गुजरना ही है	55
55	क्यों ना जीत जाऊँ, मैं हर बार	56
56	कुछ काम अमर कर जाना साथी	57
57	मेरी बेटी मेरा अभिमान	58
58	संवेदना से भरा: संवेदना से शून्य	59
59	दादी मां	60
60	अनूठा नारियल	61
61	हार से न हार मान	62
62	दीपक का संदेश	63
63	प्रेरणा	64
64	शब्दों की ताकत	65
65	क्रोध	66

क्र.सं./S.No.	शीर्षक/Title	पृ./Pg.
66	मुस्कुराते रहिए	67
67	कर्तव्य गान	68
68	मेहनत का फल	69
69	स्त्री का नौकरी करना	70
70	रिश्तों के इंद्रधनुष	71
71	महिमा तेरी निराली	72
72	A soul free of sins	73
73	Concept of happiness	74
74	The Wall Lizard	76
75	Healing Nature	77
76	Echoes of Learning: A Tribute to KVS	78
77	Viksit Bharat: A Vision Of Glory	79
78	You call me a Teacher	80
79	And I thought it was just a job	81
80	A teacher of the millennia	82
81	Skin	83
82	Garden of my heart	84
83	Keep it clean	85
84	Where light prevails	86
85	Hope	87
86	A Child in Rags	88
87	Be the one...	89

क्र.सं./S.No.	शीर्षक/Title	पृ./Pg.
88	My Teaching Philosophy	90
89	Youth Power (Youngistan)	91
90	Spring: An Anthem	92
91	Garden of my life	93
92	A Door to destiny	94
93	Modern Halls of knowledge	95
94	Mending Away	96
95	My KVS My Pride	97
96	Whisper of dawn	98
97	To kill a Girl child	99
98	Let it go	100
99	My bird is flying high	101
100	Education's gift	102
101	Guardian of Pearl	103
102	Three decades in KVS-the acme point	104
103	World is within	105
104	Positive Mindset	106

1

चाहिए ऐसा भारत

जहां हों सब समान सिर्फ कागजों में नहीं सोच में,
मिले सबको सम्मान समान निकले जब खोज में।
चाहिए ऐसा भारत...

जहां प्रगति हो पर अपनों को गिराकर नहीं।
बड़ों का अनुभव साथ हो, हो उन पर आघात नहीं।
युवाओं का साथ हो और जाए उनका वक्त बेकार नहीं।
छोटों को प्यार मिले, बने उनका बचपन दुश्वार नहीं।
चाहिए ऐसा भारत...

जहां हो तिरंगा हर दिल में, देश प्रेम हो हर मन में।
खुशियों का सावन हो, हो नारी का सम्मान हर आंगन में।
सभ्यता-संस्कृति फले-फूले, हो जिम्मेदार सभ्य नागरिक जहां।
भारत मां के सच्चे सपूत पैदा हों, हर दिन मने त्यौहार जहां।
चाहिए ऐसा भारत...

गिरते को उठाने वाले लोग साथ हों, मुश्किलों में थामने को एक हाथ हो।
आतंक के खून से ना सने भारत मां का दामन, खिलता मुस्कुराता हो हर आंगन।
भय रहित हो हर बचपन, पथ भ्रष्ट न हो देश का यौवन।
हर बचपन को मिले सुरक्षित पोषण, युवाओं को मिले अच्छा निर्देशन।
चाहिए ऐसा भारत...

जिसकी मिट्टी की सौंधी खुशबू में किसान हर्षाए।
जहां तिरंगा शान से आसमान में लहराए।
जहां दुनिया के नक्शे में भारत का नाम जगमगाए।
जहां हर जन शान से जन गण मन गाए।
चाहिए ऐसा भारत...

ज्योति
टी.जी.टी. (गणित)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय कोल्लम

2

एक दीपक विश्वास का

एक दीपक विश्वास का, तुम शिक्षा के द्वार पर जला देना।
होगा असीम प्रकाश फिर, तुम लक्ष्य पथ अपना पा लेना।।
एक दीपक विश्वास का...

शिक्षा के पहरेदार तुम्हारा, हर पग पर ज्ञान बढ़ाएंगे।
ज्ञान की गंगा में तुमको, वो गोते नित लगवाएंगे।।
बस थाम के उंगली चल देना और मंजिल अपनी पा लेना
एक दीपक विश्वास का...

वो द्रोणाचार्य की भूमिका, बखूबी ही निभाएंगे।
घिस कर ज्ञान की कसौटी पर, तुम्हें हीरे सा चमकाएंगे।।
तुम बनके एकलव्य उनके, बस चरणों में शीश नवा देना
एक दीपक विश्वास का...

विश्वास के दम पर है दुनिया, विश्वास है जीवन का आधार।
ये गिरते हुए को थाम ले, ये पत्थर में भी भर दे प्यार।।
तुम बनके दीपक की ज्योति, प्रकाश पुंज फैला देना

एक दीपक विश्वास का, तुम शिक्षा के द्वार पर जला देना।
होगा असीम प्रकाश फिर, तुम लक्ष्य पथ अपना पा लेना।।

शंकर दास मेहता
पी.जी.टी. (गणित)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय चेनानी

3

जीवन और धैर्य

जब चारों तरफ निराशा हो, जीवन में कोई न आशा हो,
बस धैर्य बनाए रखना तुम, नित आगे बढ़ते रहना तुम।

रुकना नहीं, झुकना नहीं, बस दृढ़संकल्प बनाए रखना तुम,
यह जीवन का बस एक चक्र है, जो प्रतिपल चलता रहता है,
बस धैर्य बनाए रखना तुम, नित आगे बढ़ते रहना तुम।

जैसे रात के बाद, दिन आता है, चाँद के बाद सूरज आता है,
जीवन में सुख-दुख का चक्र भी, ऐसे ही चलता रहता है,
बस धैर्य बनाए रखना तुम, नित आगे बढ़ते रहना तुम।

तुम भूल न जाना अपना वादा, होना मत अधीर ज्यादा,
मन में एक विश्वास का दीपक, सदा जलाए रखना तुम,
बस धैर्य बनाए रखना तुम, नित आगे बढ़ते रहना तुम।

कर्म पथ पर बिना रुके, बस चलते ही जाना तुम,
मन में अटल विश्वास को, सदा बनाए रखना तुम,
निश्चय ही वह दिन आएगा, जब होगी जय-जयकार तुम्हारी,
बस धैर्य बनाए रखना तुम, नित आगे बढ़ते रहना तुम।।

नीतू शर्मा
टी.जी.टी. (हिंदी)
केन्द्रीय विद्यालय क्र. 2 एच बी के, देहरादून

4

क्षमा

ऐ! प्रकृति तू न लज्जित हो
अपनी ही सृष्टि पर
मानव की विनाशकारी दृष्टि पर।
मैं मानव क्षमा माँगता हूँ, आज सन्धि पक्ष से
अब न तुझे मलिन करूँगा
अपनी विनाशकारी दृष्टि से।

तू जीवन का आधार है वन
तेरे अपराधी हैं हम
तू जीवन दाता है
पर तेरी मृत्यु का कारण हैं हम
ऐ ! वन क्षमा कर
मानव को आज सन्धि पक्ष से।

पक्षी, तू आकाश का अधिपति है
मानव विकास की प्रेरणा है तू
तेरी स्वतंत्रता में शूल बने हम
ऐ! पक्षीराज क्या क्षमा करोगे
मानव को आज सन्धि पक्ष से।

पृथ्वी को नियंत्रित किया तुमने
पर्वत, पठार और मैदान
पर्वत की विध्वंसकारी शक्ति हैं हम
मैदान पर बोझ, पठार पर हावी हैं हम।
ऐ ! पृथ्वी के संतुलन क्षमा करो
मानव को आज सन्धि पक्ष से।

सृष्टि के पालक- वायु, जल
जैविक-अजैविक तत्वों का आधार हो तुम,
वायु के संतुलन के विनाशक हैं हम,
जल को विष बनाने वाले
घोर प्रदूषण के कारण हैं, हम।
ऐ! सृष्टि के जीवन क्षमा कर
मानव को आज सन्धि पक्ष से,
अब न तुझे मलिन करूँगा
अपनी विनाशकारी दृष्टि से।

गरिमा जोशी
पी.आर.टी.
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय आई.एम.ए., देहरादून

5

जहाँ चाह, वहाँ राह

जहाँ चाह, वहाँ राह होती है,
कभी पतझड़ में भी बरसात होती है।

खिलते है बंजर धरती पर भी फूल,
आसमान में भी झंकार होती है।

मिलती है सागर में नदियां,
फिर भी नदियां महान होती है।

टूटकर जुड़ने पर ही हमें,
हमारी पहचान होती है।

लिखती है जिंदगी रोज नई परिभाषाएं,
इसलिए तो कभी मुश्किल,
कभी मुश्किलें आसान होती हैं।

सोते हुए देखते हैं हम सपने हजारों,
सुबह होते ही यथार्थ से पहचान होती है।

फिर भी जो हारते हुए भी ना हार माने,
उसी की जिंदगी गुलजार होती है।

हेमन्त कुमार चन्देल
पी.आर.टी.
केन्द्रीय विद्यालय क्र.2 इन्दौर

6

ये जरूरी तो नहीं

चलता हूं राह का
पथिक बनकर।
हर समय मंजिल मिले।
ये जरूरी तो नहीं।।

अपनों की भीड़ में
अकेले हैं हम।
हक के लिए चुप रहूं।
ये जरूरी तो नहीं।।

तम की तमस भले
ही घनी हो।
पर दीया ही ना जलाऊं
ये जरूरी तो नहीं।।

मन मेरा निर्मल व
पाक साफ है।
हर किसी को बताऊं
ये जरूरी तो नहीं।।

हर मोड़ पर खुशी
मिलती है मुझे।
पर गम कभी ना मिले
ये जरूरी तो नहीं।।

आसमान भले ही
ऊंचा हो।
पर हौसलों में उड़ान ना हो
ये जरूरी तो नहीं।।

रमेश कुमार
पी.जी.टी. (गणित)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्र.1 जालंधर कैंट

7

केन्द्रीय विद्यालय है सक्षम

केन्द्रीय विद्यालय है सक्षम,
भाषा ज्ञान हो, विज्ञान हो
या हो देश प्रेम का भान।

मान बढ़ाते छात्र हमारे
संपूर्ण विश्व में सम्मान, हैं पाते।
नित दिन नई ऊंचाइयों को छूते
राष्ट्र सेवा की अलख, हैं जगाते।

स्काउट गाइड से लेकर परीक्षा पे चर्चा तक
अपने हुनर का लोहा मनवाते।
चाहे हो वृक्षारोपण का अभियान
बढ़-चढ़कर पर्यावरण संरक्षण का बिगुल बजाते।

चाहे हो सी ए जैसे कठिन परीक्षा
पूरे राष्ट्र में अव्वल होकर दिखलाते
स्कूली शिक्षा की सबसे बड़ी व्यवस्था
केन्द्रीय विद्यालय में हैं, हम पाते।

केन्द्रीय विद्यालय सी सस्ती शिक्षा
और कहीं नहीं हम पाते।
केन्द्रीय विद्यालय की देशव्यापी पहुँच
जैसा विस्तार और कहीं नहीं हम पाते।

कर्मठ शिक्षक और प्रशासक
सरकार की विभिन योजनाओं को हैं लागू कर पाते।
मिनी इंडिया हैं हम कहलाते,
राष्ट्रीय एकता को सजाते-सँवारते।

केन्द्रीय विद्यालय के छात्रों, कर्मियों का उत्साहवर्धन
है, राष्ट्रीय एकता-अखंडता का है संवर्धन
केन्द्रीय विद्यालय है सक्षम।

प्रवीण कुमार
प्रशासनिक अधिकारी
के.वि.सं. क्षेत्रीय कार्यालय, दिल्ली

8

मैं श्रमिक हूँ

मैं धरा के भार को सर पर उठाए,
चल रहा हूं आस सूरज से लगाए
कब वो थक के रश्मियां अपनी समेटे,
कब मेरी मजदूरी मेरे हाथ आए

इन शहर की रौनकों में मैं बसा हूँ,
हर इमारत की चमक में मैं गड़ा हूँ
तुम पता मेरा कहीं पर पूछना
हर गली नुक्कड़ चौराहे में खड़ा हूँ,
खींचता हूँ रोज गाड़ी जिंदगी की
इक नया बाजार कान्धे पर सजाये,

है मेरा आंगन मेरा संसार भी है,
जिंदगी जीने का इक आधार भी है
पीछे बस्ती में किराये के मकान में
बीवी-बच्चों से सजा परिवार भी है,
और कुछ चिंता न अब मुझको सताती
बस मेरे बच्चों को रोटी हाथ आये,

कारखानों में शहर की हस्तियों में
है मेरा जीवन पुरानी बस्तियों में
तुम मेरे हालात सुनकर क्या करोगे
जग भंवर है और हम हैं कश्तियों में
हाथ है पतवार तो तुम पार उतरो
हम वो मांझी नहीं जो नदी से मात खाएं।।

रवीन्द्र शुक्ला
पी.आर.टी.
केन्द्रीय विद्यालय शक्तिनगर

9

हिंदी

राष्ट्र का गौरव है, तू
इस कुल की है तू, बिंदी
मेरे हृदय की वंदना है,
और तेरे उर की कालिंदी।

अचला से अभ्र तक तेरा ही संचार है,
तेरे ही संसार में हर भाषा का व्यवहार है।
तेरी वंदना वीणा का आगाज है।
मात्र भाषा नहीं, मातृभाषा का उपहार है।।

नभ के मस्तक पर चांद सी विद्यमान है,
तू मेरी भाषा,तू मेरी हिंदी, तू मेरा अभिमान है।

फुलवारी की सुगंध में जो क्षमता है,
तू उस बगीचे का आकार है।
विद्वता का मंडन, तेरे हर क्षण में है।
भाषा का युद्ध है, पर तू एक रण में है।।

माँ कह दूं तुझे, या कह दूं, तुझे जोगिनी
हर भाषा को आकार देती, तू है एक योगिनी
तपस्वी का राग भी रागिनी से बढ़ता है,
तू मेरे हृदय की भाषा है
दिन ढले तो सूरज चढ़ता है।

अंकिता
टी.जी.टी. (हिंदी)
केन्द्रीय विद्यालय ए.ए.आई. रंगपुरी

10

कृषक

अपने सपनों को तिलांजलि देकर
जीना सीखा जिसने औरों के लिए।
हाड़-तोड़ मेहनत करके भी
जुटा नहीं पाता वस्त्र, जो तन ढकने के लिए।
स्वयं तरस जाता है, एक जून के भोजन के लिए
परंतु खेतों में दिन - रात खून-पसीना बहाकर
अनाज उपजाता है, जो दूसरों के लिए।

अभावों में दैन्य-भाव का, जो बोध न होने देता है,
गरीबी में भी रहता है जो प्रतिपल चेहरे में प्रसन्नता लिए।
ईमानदारी झलकती है जिसके रग-रग में,
कर्मवादी बनना है जिसके व्यक्तित्व में,
झोंपड़ी है आवास जिसका, समर्पण है आधार उसका।

निर्धनता में भी खुशहाल रहना
अपना लिया जिसने जीवन का मूलमंत्र।
विषम स्थिति में हिम्मत से काम लेना,
है जिसका परम धर्म।
ऐसे हैं हमारे देश के वीर कृषक,
प्रकृति से प्रेम करता।

प्रतिकूल परिस्थितियों में भी रहकर अडिग
हौसला न छोड़ेंगें, साहसी जीवन जिएँगें,
खुशियों की परवाह किए बगैर
आपदा से मुक़ाबला डटकर करेंगे।
आगे बढ़ने की होड़ में सदैव तत्पर रहेगें।

सुनीता केशर
उप-प्राचार्या
केन्द्रीय विद्यालय क्र. 1 एस.टी.सी.जबलपुर

11

एक और स्वरूप- प्रकृति

फल-फूल, साख, छाया, तने
सब कुछ तुझसे पाया हमने
फिर भी उस दाता के तन पर
हथौड़ा खूब चलाया हमने।

नासमझी की हदें पारकर
सृष्टि को भरमाया हमने
विकसित अपनी राह बनाने
प्रकृति को खूब रुलाया हमने।

गर रोई प्रकृति, तो सैलाब आएगा
प्राणी मात्र का अवशेष न बच पायेगा
ना कुछ लेकर आया था तू
ना कुछ लेकर जायेगा
जो कुछ पाया इसी धरा पर
यहीं कहीं रह जायेगा।

राह-ए- मुसाफिर, संभल जा वरना
मंजर-ए-तबाही आएगी
जहाँ-ए- गुलिस्तां, उजड़ा होगा
घनघोर त्रासदी छाएगी।

प्रकृति से खिलवाड़ का
अंजाम तुझे भुगतना होगा
जो अब तक खामोश था, उसके
विकराल स्वरूप से डरना होगा।

प्रकृति की रक्षा, पालन पोषण
निर्बाध रूप से करना होगा
कष्ट दिया था, हमने जिसको
अब कष्ट उन्हीं का, हरना होगा।

सुधाकर नंदनवार
टी.जी.टी.
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय कुरुद

12

दीपक

उन दीपों को याद करो, जिसनें ये सम्मान दिया।
लिए देश की सीमाओं पर, प्राणों का बलिदान दिया।

धन्य है माँ तू, तेरा दीपक, कभी नहीं बुझ पायेगा।
सूरज जैसा यह बलिदानी, जग में प्रकाश बिखराएगा।

उसकी स्मृति को मन में लेकर,क्यों आँखों को सजल किया।
देश के पथ में तूनें अपनी, ममता को बलिदान किया।

तेरी नहीं देश के जन-जन, के नयनों की वह ज्योति।
बलिदानी पुत्रों की माँ तो, देव पूज्य ही हैं होती।

आशा सिंह
टी.जी.टी. (हिंदी)
केन्द्रीय विद्यालय क्र.2 विजयवाड़ा

13

माटी तेरे रंग हजार

माटी तेरे रंग हजार, कण-कण से तू करती प्यार।
बीज डाल के देखे कोई पौधा हो जाता तैयार।
हलधर के हर सपने को, हे माटी तुम करती साकार।
माटी तेरे रंग हजार, कण कण में खुशियां हैं अपार।

नभ ने तुमको जलवृष्टि दिया,
तुमने हमको नव दृष्टि दिया।
देख सपूत पाता गोदी में तेरी खुशियां अपरंपार।
माटी तेरे रंग हजार, कण कण में खुशियां हैं अपार।

देश देश को छाया देती, मानव को नव काया देती।
मेरी ये माटी की काया तेरा मान रही साभार।
माटी तेरे रंग हजार, कण कण में खुशियां हैं अपार।

यह माटी जो सब कुछ देती,
तुम भी इसको सींचते रहना।
खून पसीना देकर प्यार।
माटी तेरे रंग हजार, कण कण में खुशियां हैं अपार।

पवन कुमार पाण्डेय
पी.आर.टी.
केन्द्रीय विद्यालय न्यू कैंट प्रयागराज

14

हीरक जयंती गीत

आओ जन-नायक साथ हमारे।
जन सेवा हित साँझ सकारे।।

सम्यक मूल्यांकन और उपचारण
जन जन का हित संवर्धन
केन्द्रीय विद्यालय संगठन का उच्च लक्ष्य है
व्यक्ति समाज और राष्ट्रोत्थान।।

लोक हितैषी सेवा शिक्षा
जन मन प्रेरित सतत सुरक्षा
तत् त्वं पूषन् अपावृणु ही ध्येय है
केन्द्रीय विद्यालय हमारा प्रिय संस्थान।।

उठो संगठन के कर्मठ सेवक
शिक्षक, अभिभावक और प्रबंधक
बुला रहे हैं कार्य लोकहित
तुम पर निर्भर देश निर्माण।।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को करें अमल
जिससे विकसित भारत का खिले कमल
पीएम श्री विद्यालय भी है अद्भुत सृजन
जो देगा मौलिकता एवं सम्यकता का नव-प्रमाण।।

आओ जन नायक साथ हमारे
जन सेवा हित साँझ सकारे।।

संदीप कुमार शर्मा
प्राचार्य
केन्द्रीय विद्यालय ओ.एन.जी.सी. श्रीकोना

15

आज़ादी का अमृत महोत्सव

देश यह मेरा हिंदुस्तान, देशवासी हैं हम इसके,
आज़ादी के 75 साल, पूरे कर लिए हैं इसने।

शुरू हुई सन् सत्तावन में, आज़ादी की पहली बगावत,
आज देश मना रहा है, आज़ादी का अमृत उत्सव।

भूले नहीं भुलाए जाते, वीर-वीरांगनाओं की शहादत,
हर एक भारतीय का, नमन है उन्हें शत-शत।

परिवार त्यागे, अपने प्राणों की दे दी आहुति,
पर बुझने न दी, आजादी की अमर ज्योति।

यह एक -दो दिनों की बात नहीं, कृतज्ञ है जीवन का प्रतिक्षण उनका,
हमारे भारत देश की मिट्टी में, मिला हुआ है लहू का कण-कण जिनका।

क्या गजब की मुहिम छेड़ दी है, मोदी जी के विचारों ने,
बच्चे बूढ़े सभी याद कर रहे, वीर सुपुत्रों के बलिदानों को।

टोले-मोहल्ले-टेलीविजन पर, मनाया जा रहा यह एक पावन उत्सव,
देश के लिए सही मायने में, यही है आज़ादी का अमृत महोत्सव।
यही है आज़ादी का पावन अमृत महोत्सव।

अमित कुमार गुप्ता
पी.जी.टी. (सीएस)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय सिलचर

16

वृक्ष की व्यथा

संग्राम बहुत झेले हमने
विध्वंस देखे हैं बार-बार
हार नहीं मानी हमने
होते रहे हम पर प्रहार।

कभी काट दिए कभी जला दिए
टुकड़ों में हमको बांट दिया
जिसने जीवन भर कष्ट दिए
उसका अंतिम क्षण साथ दिया।

हम जड़ चेतन हैं हममें भी
है जान नहीं तुम जान सके
हम वृक्ष तुम्हें सुख देते हैं
क्यूँ नहीं तुम ये पहचान सके।

क्यूँ चीख नहीं सुन पाए तुम
आरी हम पर चलवाते थे
हम जोर-जोर से रोते थे
तुम उतना ही मुस्कुराते थे।

सोचो यदि हम नहीं होंगे तो
पृथ्वी पर कोई रह पाएगा?
इसलिए करो पौधरोपण
फिर धरा पर स्वर्ग हो जाएगा।

अनिल कुमार
सहायक अनुभाग अधिकारी
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय आयुध निर्माणी, हजरतपुर

17

बच्चे हैं देश का भविष्य

बच्चे हैं देश का भविष्य, ये सच है महान,
इनकी मुस्कान में छिपा है, हर एक का अरमान।

इनकी आंखों में चमक है, सपनों का संसार,
इनके कदमों से जुड़े हैं, देश के हर विचार।

खेल-खेल में सीखते हैं, देशभक्ति के गीत,
इनके संग-संग बढ़ते हैं, हमारे सारे मीत।

इनके सुकून में बसता है, भारत का स्वाभिमान,
इनके उजले भविष्य से, रोशन हो हमारा जहान।

इनके हाथों में सवेरा है, नये युग का आगाज,
देश की शान बढ़ाते हैं, ये नन्हे नाजुक राज।

बच्चे हैं देश का भविष्य, ये सच है महान,
इनकी मुस्कान में छिपा है, हर एक का अरमान।

पूजा गुप्ता
पी.आर.टी
केन्द्रीय विद्यालय क्र.2 विजयवाड़ा

18

स्वर्ण युग की शुरूआत

भारत की संस्कृति बहुआयामी, इसका महान इतिहास
होती जिसके साथ, एक स्वर्ण युग की शुरूआत।

हमारी यह प्राचीन विरासत, परम्पराओं का समावेश
भारत की वास्तु, शिल्पकला, देती एक महत्वपूर्ण सन्देश।

उदारवाद और सहिष्णुता, भारतीय संस्कृति का आधार
विविधता में एकता का, है यह सम्पूर्ण सार।

वसुधैव कुटुम्बकम का मूल दर्शन, सारे विश्व को ज्ञात
भाषा सबकी चाहे भिन्न हो, भाव सभी का एक ही बात।

ऐसे देश की गौरव गाथा, है सबसे निराली
कहीं प्रेम का रंग है तो कहीं भक्ति भावना मतवाली।

भारत की जय बोलो, शुरूआत करो नए कल की
यही सन्देश है जन-जन तक, खेलो प्रेम की होली।

जन-जन का उत्थान ही, इस संस्कृति की शान
भारत की परम्पराएँ हैं, इसकी अमूल्य पहचान।

आओ गाएं सब मिलकर भारत की गौरव गाथा को
सबका भाग्य बनाता जो, प्रेम भाव सिखलाता वो।

जतिंद्र कौर
पी.जी.टी. (हिंदी)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय आई.टी.बी.पी भानू

19

शिक्षा ही जीवन है

पढ़-लिखकर हमें जमाने से,
अधिकार अपने पाना है।
जीवन को सुशिक्षित बनाकर,
परिवार को सुखी बनाना है।।

हम पढ़ेंगे देश बढ़ेगा,
देश में ज्ञान का दीप जलेगा।
धरती पर स्वर्ग बनेगा,
विश्व में देश का नाम बनेगा।।

देश को साक्षर बनाकर,
जनजीवन को ऊंचा उठाना है।
पढ़-लिखकर हमें जमाने से,
अधिकार अपने पाना है।।

हम सुधरेंगे जग सुधरेगा,
जग में फैला अंधकार मिटेगा।
शिक्षा से ही जीवन का अर्थ मिलेगा,
पाप-पुण्य का राज मिलेगा।।

मन के भ्रम मिटाकर,
रूढ़िवादिता से मुक्ति पाना है।
पढ़-लिखकर हमें जमाने से,
अधिकार अपने पाना है।।

ब्रह्मदेव गौड़
पुस्तकालयाध्यक्ष
केन्द्रीय विद्यालय क्र. 1 इन्दौर

20

मन के भोले-भाले बच्चे

जो मन में आता है वो सब, बिना झिझक कह जाते बच्चे
कभी धूप और कभी छांव भी, हंस कर के सह जाते बच्चे
गर देखभाल में कमी हुई तो, फिर वो मुरझा जाएंगे
नाज़ुक कली के जैसे होते, मन के भोले भाले बच्चे।

क ख ग घ, ए बी सी डी, पढ़कर जब थक जाना तुम
तब बिना झिझक के दौड़ते हुए, मेरे पास आ जाना तुम
मैं तुम्हें दिखाऊंगा, इस दुनिया के भी बाहर दुनिया है
जहां नन्ही नन्ही रंग बिरंगी, चिड़िया और तितलियां है
तितली के संग तितली बन, आकाश में उड़ने वाले बच्चे
नाज़ुक कली के जैसे होते, मन के भोले भाले बच्चे।

बच्चे गंगा जल सा निर्मल. पवित्र और पावन होते हैं
जो चाहे लिख दें हम उनमें, कोरा कागज होते हैं
इनके बिना दुनिया है सूनी, घर का आंगन सूना है
ये समझो बच्चे धरती पर, ईश्वर का एक नमूना है
नए जोश और नई उमंगों, के संग चलते रहते हैं
चींटी जैसा स्वभाव उनका, कभी नहीं वह थकते हैं
पर रात को थक कर सो जाते हैं, दिनभर खेलने वाले बच्चे
नाज़ुक कली के जैसे होते, मन के भोले भाले बच्चे।

उमा शंकर
पी.आर.टी.
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्र.2, वास्को

21

नारी तेरा सफर

वो बेटी, बहन,पत्नी, माँ सब बन जाती है
स्त्री है वो न जाने, कितने किरदार निभाती है।

कभी अपनों के लिए मौन, तो कभी अपनों की आवाज़ है
कभी पुराने रिवाज़, तो कभी नए दौर का आग़ाज़ है।

कभी चाँद सी सुंदर, तो कभी सूरज सा ताप है
कभी उलझे सवालों की गुत्थी, तो कभी खुले राज है।

कभी फूल सी कोमल,तो कभी शक्ति का स्वरूप है
कभी खिलती मुस्कान, तो कभी बिलखती अंदर है
कभी शांत दरिया, तो कभी उफनता समुंदर है।

कभी आईना है समाज का, तो कभी करती है सामना समाज का
हे नारी तू आधार है हम सभी के अस्तित्व का
कर्ज़ न चुका पाएगी यह धरती तेरे स्त्रीत्व का।

घर से लेकर मंदिर तक हर जगह तेरा वास है
नारी तू ही प्रेम है, आस्था है, विश्वास है
सद्गुणों की ख़ान है, तू ख़ुद एक सम्मान है।

मेरे पास अलफ़ाज जैसे, अधभरा कोई सागर है
तेरे स्त्रीत्व के आगे तो, फीका ये सब सागर है।

फिर भी साहस है दिखलाया तुझ पर लिखने का
सीख या ज्ञान नहीं सम्मान दिया है, सम्मान दिया है।

रीना वर्मा
पी.आर.टी.
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्र. 4 मामून कैंट पठानकोट

22

स्वरूप

इक नन्हीं सी प्यारी चिड़िया
लिए ममत्व की गागर उर में
तिनका-तिनका ढूंढ रही थी,
नगर-नगर में, डगर-डगर में।

स्वयं रचा फिर बड़े जतन से,
उसने अपना सुंदर संसार
खाली मकान के इक कोने में,
पाया माँ होने का अधिकार।

महक उठी थी उसकी बगिया,
नन्हें-नन्हें सुमनों से,
जो लगते थे, उसे सदा ही,
पूर्ण होते सपनों से।

अब वो फिरती दिन-दिन भर,
दाना-दाना पाने को
मातृत्व का धर्म निभाती,
नन्हों की भूख मिटाने को।

एक शाम जब चिड़िया लौटी,
सब कुछ देखा बदला-बदला
छिन्न-भिन्न उसका संसार,
पड़ा हुआ था, उजड़ा-उजड़ा।

मसल दिया कोमल सुमनों को
सँवारा अपने घर का रूप,
मानव के वेश में छुपा हुआ है,
एक जानवर का स्वरूप।

पूनम पाण्डे
कला शिक्षिका
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्र.1 जी.सी.एफ. जबलपुर

23

कन्या- भ्रूण हत्या

एक डोर से बँधी तेरी माँ!
साँस तुझी से लेती हूँ,
दिल धक-धक करता जो तेरा,
वो धड़कन मैं ही होती हूँ।

अपने रक्त से सींच रही तू,
आकार मेरा बढ़ाने में,
आँख तेरी जो नम हुई तो,
रोई हूँ मैं भी रातों में।

आज तेरे क्या मन में आया,
क्यूँ ठानी करने का सफ़ाया,
क्या प्रेम में तेरी बाधक हूँ मैं,
या वंश बेल का बीज नहीं?

तू निष्ठुर,निर्मम हुई कैसे माँ,
क्या समाज तुझे सताता है?
अपने अंग को काट,जुदा कर
अपना वर्चस्व बचाता है?

मैं तेरी प्रतिछाया बनूँगी,
मत कर अपने से जुदा,
देख लेने दे ज़ालिम दुनिया,
जिसने ये सब स्वाँग रचा।

तू मुझे मिटाकर इस तरह से
सीख किसी को ये देगी?
तू ख़ुद भी एक औरत है,
क्या अपना वजूद मिटा देगी ?

नीलम कुमार
पी.आर.टी.
केन्द्रीय विद्यालय सिख लाइंस, मेरठ छावनी

24

अनकहे एहसास

तुम ही दुनिया में लाई हो, तुमसे ही अस्तिव पाया है,
तेरे स्तन की रसधार से जीवन मुझे मिल पाया है,
तूने लहू से सींच अपने मेरी जीवन बेल बढ़ाई है,
खुद रातों को जाग-जाग मुझे मीठी नींद दिलाई है।

स्वयं गीले में सोकर के सूखे में मुझे सुलाया है,
मेरी छींक मात्र पर तूने अपना सुख-चैन गंवाया है,
मैं जब कुछ माँगता था, उसे तू उपलब्ध कराती थी,
मेरी गलतियों को भी माँ तू नज़र-अन्दाज़ कर जाती थी।

जब भी चोट लगी मुझको तूने अहसास कराया माँ,
मेरे दर्द को तूने अपनी आँखों से छलकाया माँ,
तुमने ही मुझे शिक्षा दी है, चरित्र निर्माण कराया है,
ख़ुद भूखी रहकर तूने मेरा पेट भराया है।

पूरे दिन काम करके तू जब भी माँ थक जाती थी,
अपनी थकान भूलकर भी तू लोरी मुझे सुनाती थी,
ख़ुद रातों को जागी थी, तू मुझे पढ़ाने बैठी थी,
अशिक्षित होकर के भी माँ तू हौसला बढ़ाने बैठी थी।

मेहनत करके तूने माँ नाज़ों से मुझे पाला है,
संस्कार अच्छे देकर के जीवन में किया उजाला है,
सिर पर हाथ रख अनुकम्पा सदा बनाना तुम,
जब भी याद मैं करूँ तुम्हारी लब पर हँसी सजाना तुम।

तुम्हारा चेहरा मेरी नज़रों में सदैव ही आता है,
हर बात में ज़िक्र कर तुम्हारा दिल मेरा भर आता है,
चिंता सब रिश्तों की कर माथे पर सिकश्त तुम लाती हो,
ख़ुद बुखार में तपकर भी तुम खाना मुझे खिलाती हो।

वो तेरी करूँणा भरी आँखें और वो ममता भरी छाती थी,
कर आँचल की छाँह तू मुझे दूध पिलाती थी,
नन्हें पैरों से मैंने कई बार तुझे मारा भी माँ,
फिर भी तूने चूम माथे को प्यार से पुचकारा माँ।

सुन रोने की आवाज़ मेरी तू दौड़ दूर से आती थी,
बिन बोले मेरे भाव समझ सीने से मुझे लगाती थी,
मेरी पहली शिक्षक बन तूने अक्षर ज्ञान कराया था,
अ-आ-इ, ए-बी-सी, गिनतियों का पाठ पढ़ाया था।

नौ माह मुझे कोख में रख प्रसव पीड़ा भी उठायी थी,
हाँ माँ तू ही थी जो मेरे अनकहे अहसासों को समझ पायी थी,
स्वाद तूने सारे तजे थे, मुझे स्वस्थ बनाने को,
ऐ माँ तेरा धन्यवाद मुझे अस्तिव में लाने को ॥

सोमवीर
प्रधानाध्यापक
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय एन.के.जे. कटनी

25

शिक्षा और संघर्ष

संघर्षों के अंधियारों में,
जब सब कुछ मिट सा जाता है।
तब छिन्न-भिन्न जीवन पथ में,
शिक्षक आशा के दीप जलाता है।

हे वीर, बढ़ो तुम अब गर्जन कर,
ना झुको, ना रुको, तुम डरकर।
जो डर कर तुम रुक जाओगे,
नित ठोकर ही तुम खाओगे।

विष को अमृत सा पीकर,
चाहे भूखे-प्यासे दिन भर रहकर।
गर शिक्षा तुमको मिलती है,
तुम पा लो उसको काँटों पर चलकर।

विद्या के आलोक में जो तुम,
खुद को ले जो जाओगे।
अज्ञानता के दुर्ग को भेदकर,
जग में दिनकर सा छा जाओगे।

हे वीर, तुम वीरता दिखाओ
शिक्षा की अग्नि में खुद को जलाओ।
संघर्षों की भट्टी में तपकर
खुद को कंचन सा चमकाओ।

पंकज रस्तोगी
पी.जी.टी. (भौतिक विज्ञान)
केन्द्रीय विद्यालय वायुसेना स्थल बरेली

26

वह नारी है

नारी में शक्ति है,
भक्ति है और समर्पण है
अर्पण है, तर्पण है
क्योंकि वह नारी है।

उसमें संयम है,
सबको एक सूत्र में बाँधने की ताकत है।
घर आँगन को महकाने की महक तो
पुष्प से भी ज्यादा है
क्योंकि वह नारी है।

उसमें माँ की ममता का ममत्व है
प्रिया है, पत्नी है, बहन है, पुत्री है,
अनेक रूपों में अपनी अस्मिता को
बनाये रखने की क्षमता है
क्योंकि वह नारी है।

उसमें दूसरों के लिए त्याग है,
वेदना है, प्रेम है और
सर्वस्व न्योछावर करने की शक्ति है
क्योंकि वह नारी है।

वह घर बाहर के कार्य सब कुछ
एक साथ सँभालती है
ना जाने इस तरह अपने
कितने रूपों को विशिष्ट बनाती है
क्योंकि वह नारी है।

पुरुष के साथ कंधे से कंधे मिलाकर
आज वह देश की सीमा पर खड़ी
दुश्मन का भी सामना डटकर करती है
क्योंकि वह नारी है।

प्रियंका शर्मा
टी.जी.टी. (हिंदी)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्र.1 तिरुच्चि

27

निर्भया: एक खोज

कौन है निर्भया
संसार, समाज, लोक लाज के भय में जो सिमटी रहती है
सिकुड़ी सी रहती, पर नहीं अपने को खोल पाती है
हंसी तो दूर मुस्कुराना भी नसीब नहीं हो पाता है
अपने भी दूर, पराये भी दूर, उसकी सोच के कोई करीब नहीं हो पाता है
संघर्ष दिखता है वही, जो कभी-कभी सड़क पर आ जाता है
वह संघर्ष दिखता नहीं जो घर के अंदर चलता है मन के अंदर रहता है

निर्भया कहाँ जीवन भर निर्भय हो पाती है
हंसना तो दूर खुलकर रो भी नहीं पाती है
पिता भी एक समय के बाद साथ नहीं देता है
पति भी उसे रीत निभाने का उपदेश दे जाता है
सखा, सखियों से भी मन उसका बात कहाँ कर पाता है
कितनी खूबसूरत है सामाजिक सोने की रिवाज वाली बेड़ियाँ
होकर बेड़ियाँ, बेड़ियाँ नहीं गहना कहलाता है

समाज की परंपरा और रीति रिवाज सोने की रखती है चमक
कुछ चमक में नहीं है निर्भया की खनक
तुम कहते हो मुझसे आसमान में उड़ रही है कल्पना
कल्पना की कल्पना में माँ, बहन, बेटी कहाँ उड़ पाती है
मांग में सिंदूर माथे में बिंदी बस यही तस्वीर रह गई है
घर से आंगन और आंगन से रसोई यही तकदीर बन गई है
तरस जाते हैं उसके कान दिन भर खटने के बाद भी
जीवन भर कहाँ कोई कह पाता है उसे धन्यवाद के दो शब्द

वह जो भी करती है उसके केंद्र में होता है पुरुष
पृथ्वी सी बना ली है उसने परिवार की परिधि
इर्द-गिर्द घूमती है जीवन भर उसके
गिरते हैं स्वेद बिंदु माथे से रिसके
सवाल मन में सिर्फ इतना ही है
संघर्ष सड़क का ही क्यों निर्भया कहलाता है
खुद की उलझन में खुद से ही लड़कर फूल कुम्हलाता है

हर गली में एक निर्भया है
अभी कहाँ उसका भय गया है
सचमुच निर्भया को देना चाहते हो न्याय आजादी
शुरू करो खुद से खुद के पास से
और आजाद करो उस पंछी को
जिसे रमेश बाबू के सिंदूर ने डाल दिया है पिंजरे में
हंसने दो बेटियों को, खिलखिलाने दो बीवियों को
कभी- खुद ही रख दो सामने चाय की गरम प्याली
बेटियों को भी कर दो बंदिशों से दूर
दो एक खुला आसमान पंछी को
उड़ने दो लगाकर अरमानों का पंख
गर न कर सको तो लेकर नाम निर्भया का बहाना, आंसू व्यर्थ है।

डॉ. अजय आर्य
पी.जी.टी (संस्कृत)
केन्द्रीय विद्यालय, दुर्ग

28

माँ

माँ ही केवल माँ जैसी है
इस नश्वर ससांर में
माँ का ही एक हिस्सा हूँ मैं
माँ में ही समाया हूँ
उस माला का मनका हूँ मैं
उनके अस्तित्व में पाया हूँ।

अंबर समान उस आँचल में
बचपन बटोर मैं लाया हूँ
सहेज कर आँचल में खुशियाँ
माँ ने आँगन मेरा सजाया है
मैं भी बदला, जग भी बदला
लेकिन माँ केवल माँ जैसी है
इस नश्वर संसार में।

खुद को खोकर दुनिया में
मुझको आकार दिलाया है
अपनी आशाएं, इच्छाएँ लुटाकर
मुझमें सपना संजोया है।

मां से ही ये जग जीवत है
नहीं तो अकल्पित ये संसार है
तन मन धन बोली उसने दी
उससे ही रूप रंग का राज है।

दिन तो रोज बदलते ही है
मौसम भी रूप बदल कर आते है
पर मां तुम केवल मां जैसी हो
इस नश्वर संसार मे।

तुममें कहीं कोई कशिश है
तुमसे शुभ आशीष ही पाया है
तुम्ही वत्सला, तुम्हीं सुदर्शना
अमृत दायिनी तुम हो निर्मला
तुम ही एक शक्ति दिखती हो
इस निर्जन संसार में
मां तुम केवल मां जैसी हो
इस नश्वर संसार में।

कामिनी सिंघल
पी.जी.टी. (सीएस)
केन्द्रीय विद्यालय जनकपुरी

29

बचपन की कहानी

सुनाएं अपनी जुबानी,
अपने बचपन की कहानी।
जिसमें होता था एक राजा और महलों की रानी।
सुनो बचपन की कहानी।

रोज सवेरे खलिहानों तक नंगे पांव ही जाना।
खेतों पर छप छप छपाक कर साबुन बिना नहाना।
गंगाजल जैसा लगता था ट्यूब वेल का पानी।
सुनो बचपन की कहानी, अपने बचपन की कहानी।

दादी के किस्सों में भेड़िया भी बातें करता था।
तोते की गर्दन मरोड़ने से राक्षस मरता था।
बन्दर मामा, बिल्ली मौसी बतलाती थी नानी।
सुनो बचपन की कहानी, अपने बचपन की कहानी।

अम्मा की पहली रोटी गैया के लिए अगराशन।
खाते थे सब एक साथ ही बिछा जमीं पर आसन।
एक दूजे की चुरा के रोटी करते थे शैतानी।
सुनो बचपन की कहानी, अपने बचपन की कहानी।

चना चबैना, दूध बताशा, अपना पिज़्ज़ा, बर्गर।
चटनी, प्याज़, नमक संग हम खा लेते थे जी भरकर।
मैग्गी और चाऊमीन से अच्छी लगती थी गुड़धानी।
सुनो बचपन की कहानी, अपने बचपन की कहानी।

मनोज कुमार गुप्ता
टी.जी.टी. (अंग्रेजी)
पीएमश्री केन्द्रीय विद्यालय क्र. 2 वायुसेना स्थल, चकेरी

30

मन कहता है

उत्सव हूं मैं !
हां उत्सव हूं मैं!
जहां कहीं भी जाती हूं,
अपने उत्सव का रंग फैलाती हूं मैं।
उत्सव की खुशबू से सारा चमन महकती हूं मैं।
और कोई उत्सव ना भी हुआ तो?
स्वयं ही उत्सव बन जाती हूं मैं।

हां उत्सव हूं मैं
मित्र हूं मैं,!
हां मित्र हूं मैं !
हर मित्र का इत्र हूं मैं।
मेरे जीवन की सारी पूंजी ही है मित्रता।
निभाती हूं मैं उसे भरकर अपने मन की सारी पवित्रता।
हां एक सच्चा मित्र हूं मैं।

मन हूं मैं!
हां एक भावुक मन हूं मैं !
उसमें ही बसाया मैंने अपना सारा संसार।
आते न थे मुझे गणित के कठिन व्यापार।
किन्तु जानती हूं मन होना आसान नहीं होता?
चाहे भावनाओं में लड़खड़ाते रहे हो पांव मेरे
किंतु मैं मस्तिष्क ना बन पाई !

मन ही हूं
और मन ही रहूंगी
क्योंकि मन की भाषा ही मनमोहन को भाती है।
तभी तो कीचड़ में रहकर भी यह कमल! 'पदम' कहलाती हैं

पदमा नायडू
टी.जी.टी. (सामाजिक विज्ञान)
केन्द्रीय विद्यालय क्र. 2 नौसेनाबाग

31

हर बच्चे की इच्छा

हर बच्चे की इच्छा है, आगे वो बढ़े,
तरक्की की राह चले, ऊँचाइयों को गढ़े।
कोई बने वैज्ञानिक, कोई कवि महान,
कोई अद्वितीय व्यवसायी, पाए नई पहचान।

क्या हर किसी की इच्छाएँ, पूरी हो सकती हैं?
महानता के लिए मेहनत, करनी सबको होती है।
सिर्फ काम की नहीं, मन की भी मेहनत है,
कोशिशों से ही मिलती, सफलता की रहमत है।

मन की मेहनत का भी है महत्वपूर्ण स्थान,
ऋषियों ने बताया इसका अनुपम ज्ञान,
मुश्किलों को पार करने का, एक सटीक तरीका,
थोड़ी मेहनत, सब्र, हिम्मत का उत्तम सलीका।

सर्वशक्तिमान की प्रार्थना में है दम
है मुश्किलों को पार करने का एक सशक्त माध्यम
इसलिए तो दिन की शुरुआत करते हैं हम
प्रातः कालीन सभा में सामूहिक प्रार्थना से एकदम
शुद्ध और पवित्र मन का विशेष प्रयास,
निरंतर अभ्यास से मन हो उजास,
गीता में भी इसका है उल्लेख साध।

आओ बच्चो चलें साथ-साथ।
पकड़े आत्मविश्वास का हाथ।
शिक्षा की पतंग ऊंचे आसमान में उड़ाए।
केन्द्रीय विद्यालय का नाम गगन में फहराए।

मित्रविन्दा राव
उपप्रचार्या
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय तिरुमलगिरि

32

बचपन

छोड़ बचपन का वो आँगन मैं, जवानी की दहलीज पर आया
पीछे मुड़ के देखा तो अहसास हुआ क्या-क्या छोड़ आया
छोड़ आया मैं वो स्वर्ग सा सुख जो माँ की गोद में था पाया

छोड़ आया वो मखमली आँचल जिसने मुश्किलों की हर धूप से बचाया
छोड़ आया वो नर्म कोमल हाथ जिन्होंने मेरे वजूद को वज्र बनाया

छोड़ आया माँ की वो मधुर लोरियाँ जिन्होंने दर्द में भी मुझे गहरी नींद सुलाया
छोड़ आया माँ के हाथ का वो लजीज खाना जो स्वाद दुनिया के किसी महंगे होटल में ना आया

छोड़ आया मैं वो कांधे जिन्होंने मेरे बचपन को झुलाया
बनाने को मेरी हस्ती जिन कांधों ने अपनी जवानी को लुटाया

छोड़ आया वो भोली जिदें जिन्हे पिता ने नाजों से था उठाया
भूल कर अपना हर सुख मेरी हसरतों को ही अपनी हसरतें बनाया

छोड़ आया पिता की वो डांट जिन्होंने जीवन की सही डगर पर चलाया
छोड़ आया वो खालिस रिश्ते नहीं थी जिनमे कोई बनावटी माया

छोड़ आया जिंदा खुशियों का वो दौर जीवन था जिन से जगमगाया
छोड़ आया बचपन के खेल,मिट्टी के खिलौने और वो जो रेत का घरौंदा था बनाया

था जो स्वाद बचपन में वो जवानी में नहीं जवान होकर ये समझ आया
लाख कोशिशों के बाद भी 'पवन' बचपन की गोद में ना दोबारा जा पाया।

पवन कुमार
टी.जी.टी. (हिंदी)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्र. 2 जम्मू छावनी

33

तू बढ़ता चल

युद्ध सा हो समय,
कांटों सी हो डगर,
अश्व की रफ़्तार सा,
तू बढ़ता चल...।

भेड़ियों की भीड़ हो,
कीचकों का राज हो,
सिंह की दहाड़ सा,
तू बढ़ता चल...।

ज्ञान का प्रताप ले,
शौर्य रथ सवार हो,
द्रुतगामी पथिक सा,
तू बढ़ता चल...।

प्रेम की चाह बन,
एकता का प्राण बन,
कारवां बनाते चल,
तू बढ़ता चल...।

शहीदों पे फूल बन,
वीरता का पाठ बन,
योग के ध्यान सा,
तू बढ़ता चल...।

राजेश यादव
उपप्राचार्य
केन्द्रीय विद्यालय मथुरा छावनी

34

नया संकल्प

प्रतिदिन विहान में एक नया संकल्प करें
जल को न व्यर्थ करें, बारिश का पानी संचित करें
जल न मलिन करें, विकास का प्रण करें
धरती के गर्भ में पानी का ताल भरें
पेड़ लगाएँ हरे-हरे, वायु को हम शुद्ध करें
कंकरीट का वन लगाकर साँस न अवरुद्ध करें।१।

बेटे व बेटी में भेदभाव न करें
समाज की कुरीति का समर्थन हम न करें
समानता के अधिकार से उनका विकास करें
विद्या का दान दें सबको हम शिक्षित करें
प्रतिदिन विहान में एक नया संकल्प करें।२।

बुद्धि को बुद्ध कर मन को हम शुद्ध करें
जिज्ञासा उदीप्त कर नवोन्मेष हम करें
चरित्र का निर्माण कर चारित्रिक विकास करें
मूल्यों का ह्रास कर गति न अवरुद्ध करें
प्रतिदिन विहान में एक नया संकल्प करें।३।

सुमन पाण्डेय
पी.आर.टी.
केन्द्रीय विद्यालय भारतीय राजदूतावास काठमांडू

35

पीढ़ी अंतराल

आओ बच्चों आज कुछ ख़ास बात बताती हूँ।
पीढ़ी के अंतराल को तुम्हें मैं समझाती हूँ,
एक पीढ़ी के दूसरी पीढ़ी से विचार जब बदलते हैं,
इसी परिवर्तन को अंग्रेजी में जनरेशन गैप कहते हैं।
तेजी से विकसित होते हमारे इस समाज में
कुछ, बुजुर्गों से दूर रह कर हर्षाते हैं,
तो कुछ एकलपन से घबरा परिवार छोड़ पछताते हैं।

गर्म रक्त का जोशीला प्रवाह है इधर,
तो उधर है अनुभव बरसों पुराना।
एक को गुस्से पर काबू करना भी आता है,
तो दूसरे को आता छोटी-छोटी बात पर मुंह फुलाना

अनुभव का भण्डार है फिर भी,
भागती ज़िन्दगी में एक पीढ़ी पीछे रह जाती है।
दूसरी पीढ़ी वक़्त के साथ इतना दौड़ती है,
कि पहली पीढ़ी कोसों पीछे छूट जाती है।
दोनों पीढ़ियों में उम्र का कोई दोष नहीं,
पूर्व-पश्चिम की विचारधारा मतभेद बढ़ाती है।

वह भी समय था, जब जाड़े में
जलती अंगीठी के चारों ओर
बैठे किस्से गढ़ा करते थे।
अब समय है, हीटर की गर्मी में
अक्सर रिश्ते जल जाते हैं।।

वह भी समय था, बैठक में बैठ
दादा-दादी के कहानी अनुभवों से
हम अपना ज्ञान बढ़ाते थे।
अब समय है, उनके अनुभवों को
रूढ़ीवाद बता, अपना पल्ला झाड़ लेते हैं।

वह भी समय था, झटपट पहुँच बगिया में
लुक्का –छुपी, गिल्ली डंडा, झूले में पेंग बढ़ाते थे।।
अब समय है, व्हाट्सप्प, यूट्यूब, फेसबुक से जोड़ नाता
हज़ारों की भीड़ में भी अकेले रह जाते हैं।

गर्मी की रातों में छत पर होने वाली बात,
आनंद दे वो चांदनी रात
आसमान के वो चमकते तारे, कहाँ अब लुभाते हैं।
तकनीकियों की चकाचौंध,
बड़ा घर गाड़ी, फ़ोन ना खरीद पाने का तनाव,
अँधेरे मन के भाव, अक्सर आत्महत्या को उकसाते हैं।

आओ बच्चों, आज कुछ ख़ास बताती हूँ।
उस समय और आज के रिश्तों में
हो रहे बदलावों को ही, मैं पीढ़ी अंतराल कहती हूँ।

भूलों ना रीति रिवाज़ों को
अपने संस्कारों को भी त्यागो न
नित होते परिवर्तन, नित होते शोध नए
नई पीढ़ी का होने का, अभिमान तुम करो न
कुछ बड़ों की अनुभूति से सीखो
कुछ उनको भी सिखाओ न।

अपने सुव्यवहार से पाओ सभ्य सौगात,
इसी तरह होगा दूर, पीढ़ी अंतराल का विवाद।
इसी तरह होगा दूर, पीढ़ी अंतराल का विवाद।

रुचि शर्मा
टी.जी.टी. (कला)
केन्द्रीय विद्यालय केल्ट्रोन नगर

36

विद्यार्थी और शिक्षक

वह मिला था गीली मिट्टी सा
वह आया था खाली स्लेट सा
आँखों में किरणों का पुंज लिए
मन में सपनो का कुञ्ज लिए

मैने उसे अर्जुन सा माना
उसने मुझे कृष्ण सा जाना
उसके मन में प्रश्नों का भूचाल था
मेरा भी हर उत्तर का प्रयास था

फिर क्या? कौन रोक सकेगा ?
हे अर्जुन तुम्हारे बाणों का वेग
रचने को तेयार एक नया वेद
भारत का विश्व गुरु शंखनाद

अब भारत नित और बढ़ेगा
अब भारत नित और खिलेगा
हम विश्व गुरु कहलायेंगे
एक नया इतिहास रचाएंगे।

धर्म सुता नविन
पी.आर.टी.
केन्द्रीय विद्यालय मास्को

37

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, शिक्षा का एक दीप जलाता,
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को, हर दिल में बिठाता।

एक भारत श्रेष्ठ भारत का सपना, यहाँ पर हर रोज़ पलता,
अंतरराष्ट्रीय ओलंपियाड परीक्षा में, हर छात्र आगे बढ़ता।

लघु भारत का रूप लिए, केन्द्रीय विद्यालय संगठन ये न्यारा,
भारतीय संस्कृति की महक से, हर कोना यहाँ प्यारा।

प्रतियोगिता की भावना से, बच्चे यहाँ हैं चमकते,
परीक्षा पे चर्चा में, प्रधानमंत्री के संग मचलते।

शिक्षा और संस्कार का मेल, यहाँ पर हम पाते,
प्रत्येक विद्यार्थी में, एक नए भारत का रूप दिखाते।

कला, संगीत, विज्ञान, यहाँ पर सब हैं सीखते,
प्रगति की राह पर चलते हुए, आगे सब हैं बढ़ते।

संगठन का हर एक विद्यालय, एक मूरत है न्यारी,
एकता में अनेकता की मिसाल, यही पहचान हमारी।

शिक्षा के इस मंदिर में, हर सपना साकार होता,
केन्द्रीय विद्यालय संगठन, हर दिल का अभिमान होता।

शिवराज मीणा
पी.जी.टी. (हिंदी)
केन्द्रीय विद्यालय बचेली

38

परीक्षा पर चर्चा

आओ बच्चों धीरज से हम चर्चा करें परीक्षा की,
सुदृढ़ करें हम नींव सहज ज्ञानार्जन द्वारा शिक्षा की।

ज्ञान प्राप्ति के लिए लगन से हमको नित पढ़ना होगा,
जिज्ञासा के भाव प्रबल अंतर मन में गढ़ना होगा।

स्वाध्यायात् प्रमदितव्यम् संग निडर हमें बढ़ना होगा,
लक्ष्य प्राप्ति के लिए स्वयं, सर्वोच्च शिखर चढ़ना होगा।

हो पाएगी तभी पूर्ति अपनी अभिलक्षित सदिच्छा की,
आओ बच्चों धीरज से हम चर्चा करें परीक्षा की।

गुरु बिन ज्ञान नहीं हो पाता इसका हमको ध्यान रहे,
मात्-पिता गुरुओं का अपने जीवन में सम्मान रहे।

तुम्हीं राष्ट्र के हो भविष्य सबको इसका संज्ञान रहे,
मातृभूमि के लिए यथोचित संकल्पों का गान रहे।

कल का काम आज निपटाएं अभिरुचि ना हो प्रतीक्षा की,
आओ बच्चों धीरज से हम चर्चा करें परीक्षा की।

अनुशासन, श्रद्धा, निष्ठा, आस्था का प्रबल सुयोग रहे,
विद्या का अभ्यास निरंतर अनुक्षण ज्ञान प्रयोग करें।

जननी, जन्मभूमि,निज भाषा के प्रति नित उद्योग करें,
हौआ नहीं परीक्षा कोई, निर्भय हो प्रतियोग करें।

हाथ लगेगी सदा सफलता आवश्यकता परिवीक्षा की,
आओ बच्चों धीरज से हम चर्चा करें परीक्षा की।

डॉ चित्रा चतुर्वेदी
टी.जी.टी. (हिंदी)
पीएमश्री केन्द्रीय विद्यालय क्र. 1 आयुध निर्माणी कटनी, जबलपुर

39

वैज्ञानिक खोजगाथा

भारत के वैज्ञानिकों की कथा सुनाते हैं,
यश गान गाते हैं।
महामहोत्सव की बेला में
खोज बताते हैं,
इनकी खोज बताते हैं।
जय, जय महापर्व, अमृत महापर्व।

आर्यभट्ट को याद करें, जिसने हमें गणित सिखाई,
पाई की कीमत निश्चित की, और
शून्य की पद्धति सिखलाई।
रामानुज के गणित प्रेम की गाथा गाते हैं,
खोज बताते हैं
भारत के वैज्ञानिकों की कथा सुनाते हैं।
जय, जय महापर्व, अमृत महापर्व।

पक्षीज्ञानी सलीम अली ने अभ्यारण्य बनवाया,
जे.सी.बोस ने वायर लेस कम्यूनिकेशन सिखाया।
साराभाई के भौतिकि प्रेम की अलख जगाते हैं
खोज बताते हैं,
भारत के वैज्ञानिकों की कथा सुनाते हैं।
जय, जय महापर्व, अमृत महापर्व।

रमन प्रभाव की खोज रमन ने नोबल हमको दिलवाया,
भाभा ने परमाणु ऊर्जा के पिता का पद है पाया।
खुराना जी जीन कोड की विधा बताते है,
खोज बताते हैं
भारत के वैज्ञानिकों की कथा सुनाते हैं।
जय, जय महापर्व, अमृत महापर्व।

ऑटोमैटिक स्लुइस गेट विश्वैश्वरय्या ने बनाया
ब्लॉक इरगैशन सिस्टम से सबका परिचय करवाया
मिसाइल मैन के शस्त्र प्रेम की कथा सुनाते हैं
खोज बताते हैं
भारत के वैज्ञानिकों की कथा सुनाते है।
जय जय महापर्व, अमृत महापर्व

भारतीय महिला वैज्ञानिक ने देखो बाज़ी मारी,
सुनीता और कल्पना ने अंतरिक्ष यात्रायें कर डाली।
महिला चिकित्सक आनंदी बाई कथा सुनाते हैं
खोज बताते हैं
भारत के वैज्ञानिकों की कथा सुनाते हैं।
जय, जय महापर्व, अमृत महापर्व

इस पावन गाथा का मकसद तब ही पूरा होगा,
भारत का बच्चा-बच्चा जब इनकी तरह बनेगा।
आज़ादी के महापर्व पर कसम ये खायेंगे,
वै ज्ञानिक खोजयात्रा को आगे बढ़ायेंगे।
मिलकर आंगे बढ़ायेंगे।
जय, जय महापर्व, अमृत महापर्व

डॉ. सुनीता गुप्ता
टी.जी.टी. (विज्ञान)
केन्द्रीय विद्यालय जी.सी.एफ, जबलपुर

40

ज्ञान का दीप

ज्ञान का दीप जलाओ, अंधकार मिटाओ,
शिक्षा का प्रकाश फैलाओ, हर मन में ज्ञान बिखराओ।

अज्ञान की जंजीरों को तोड़ो, समझ का दरिया बहाओ,
संस्कृति और विज्ञान से, नए आयाम दिखाओ।

सत्य का अनुसरण करो, झूठ से न घबराओ,
ज्ञान की पगडंडी पर, हर पथिक को चलाओ।

शिक्षा से ही होता है, समाज का उत्थान,
ज्ञान ही देता है, जीवन को सही निदान।

अंधकार में प्रकाश की किरण, बनकर तुम आओ,
ज्ञान का दीप जलाओ, हर दिशा को रौशन कर जाओ।

शिक्षा है अनमोल रत्न, जीवन का ये गहना,
जिसने पाया शिक्षा को, उसने पाया सच्चा सोना।

ज्ञान का ये दीप जलाए, हर अंधियारा मिट जाए,
शिक्षा का संगम है ऐसा, जीवन नवल बनाए।

शिक्षा है शक्ति का भंडार, हर मुश्किल को हल करती,
बिन शिक्षा के जीवन में, हर राह अंधेरी लगती।

शिक्षा से खुलते द्वार, स्वप्नों की उड़ान हो पूरी,
बनती हैं सफल कहानियाँ, मिलती है हर मंजिल दूरी।

नारी हो या नर, शिक्षा सबका हक,
शिक्षा से ही बनता है, हर एक का जीवन चमक।

आओ मिलकर संकल्प लें, हर घर में शिक्षा हो,
ज्ञान का दीप जलाकर, हर मन को उजाला हो।

कमलेश जोशी
टी.जी.टी. (अंग्रेजी)
केन्द्रीय विद्यालय अजनी

41

योग

योग की माया बड़ी निराली।
मन को शांति देती मतवाली।
योग करके रोग भगाओ सभी।
बने योग से निरोगी सभी।
जनमानस के लिए क़ीमती धन।

आज से नहीं अभी से हो शुरू
बन जाएगी निर्मल काया
दूर हो जाएँगे रोग।
भारत वर्ष है उसकी जननी महती
आज हर देश में योग को स्वीकृति।

हर तरफ़ योग का गूंज जगाओ
सबका तन मन सभी चमकाओ।
दृढ़ संकल्प चित्त अपना लो
स्वीकारो प्राणायाम और योग।

जिसने योग के महत्व को जाना
उसने पाया स्वास्थ्य का ख़ज़ाना।
योग है बहुत गुणों की ख़ान
कैसे करें शब्दों में बखान?

शैलजा टी एच
पी.जी.टी. (हिंदी)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय, केल्ट्रॉन नगर

42

ऐसा भारत चाहिए

जहां सुखी इंसान हो
कोई न परेशान हो
सब के चेहरे पर
हर दम मुस्कान चाहिए
ऐसा भारत चाहिए, मुझे ऐसा भारत चाहिए।

भुखमरी न बेरोजगारी हो
जहां न कोई भिखारी हो
समानता का अधिकार हो
सब को न्याय चाहिए
ऐसा भारत चाहिए, मुझे ऐसा भारत चाहिए।

जाति- धर्म न बंधन हो
न मन में किसी के नफरत हो
मजदूर और किसान की
जय-जयकार होनी चाहिए
ऐसा भारत चाहिए, मुझे ऐसा भारत चाहिए।

शिक्षित हो जहां बच्चा -बच्चा
पक्का हो यहां रस्ता- रस्ता
चारों तरफ हरियाली
और विकास चाहिए
ऐसा भारत चाहिए, मुझे ऐसा भारत चाहिए।

खेल और विज्ञान में
नित्य नयी पहचान हो
नीले आसमान में सदैव
तिरंगा लहराना चाहिए
ऐसा भारत चाहिए, मुझे ऐसा भारत चाहिए।।

वीरपाल कौर
टी.जी.टी. (हिंदी)
केन्द्रीय विद्यालय क्र.1 अमृतसर छावनी

43

जब भी स्कूल खुलता हैं

जब भी स्कूल खुलता हैं
जब भी स्कूल खुलता हैं।
जब भी,
कहीं भी,
कभी भी,
किसी भी दिशा में,
किसी भी समय में,
किसी भी पहर में,
किसी भी शहर मे,
किसी भी गांव में,
किसी भी भाव में।

जब भी स्कूल खुलता है।
तो खुलने लगती हैं,
अपार सम्भावनाएं,
मानवीय सम्वेदनाएं,
राष्ट्र की आशाएं,
नई, नई परिभाषाएं,
ज्ञान और विज्ञान की,
सीमाएं खुलने लगती हैं।

जब भी स्कूल खुलता है।
मिटती है दिग्गंत की निराशाएं,
नव चेतना का अंकुरण,
मूल्यों का संचरण,
शुद्धता का आचरण,
मुस्कुराता आवरण।
जब भी स्कूल खुलता है।

सुशील कुमार
पी.जी.टी. (हिंदी)
केन्द्रीय विद्यालय, नाभा छावनी

44

सत्यपथ

डर मत ओ राही तू अकेला चलने से,
यह सत्य का पथ है, साथ मिलना कठिन है,

सुख का पता तेरे पास है,
गर सत्यता से तू खुद में खुद को खोज ले

न तू आगे देख न पीछे देख,
वर्तमान में सत्यता के साथ जीना सीख

सत्य का मार्ग जटिल है,
किन्तु किसी को भटकाता नहीं

सत्य ही वास्तविक संतोष है इंसान का,
यही सिखाता है जीवन में सदाचार

सत्य की राह से कभी भटकना नहीं,
एक दिन मंजिल तुझे मिलकर रहेगी

पाँव चाहें कितने भी हों झूठ के,
सुकून तो मिलेगा सत्य की छाँव में

सत्यपथ राही की मंजिल दूर होती नहीं,
बस लक्ष्य साधने को उसे रुकना होता नहीं

सत्य तो सच्चा परोपकार है,
धर्म की चादर ओढे इसका पूरा एक संसार है

निशु उपाध्याय
पुस्तकालयाध्यक्ष
केन्द्रीय विद्यालय, मथुरा छावनी

45

नारी

आज की आधुनिक नारी
कतरा-दर कतरा, जिन्दगी को संजोती नारी।
अपने आँचल में हौसलों का एहसास लिये
उम्मीदों का एक समंदर, संजोती नारी।

जीवन मरू में प्यार की सरिता बहाती
तिनका-तिनका कर अपना आसमां, रोशन करती नारी।
स्वयं के विश्वास के दम हौले-हौले बढ़ती
खुशनुमा जिन्दगी का एक कैनवास सजाती नारी।

बिखर जाती जो खुशियाँ बनकर
खुद को खुद का हमदम बनाती नारी।
उम्मीदों की सतरंगी किरणों से, स्वयं को रोशन करती
ज़माने को बदलने का एहसास जगाती नारी।

इनकी सूरत पर लिखी ज़माने की कहानी
समाज के सांस्कृतिक चेहरे का दर्पण होती नारी।
एक उन्मुक्त गगन की चाह में जीती
जीवन के विभिन्न आयामों में, स्वयं को पिरोती नारी।

स्वयं पुष्पित होती, औरों को पुष्पित करती
अपनी संवेदनाओं को अपना चरित्र बनाती नारी।
अपने हर एक कर्म को अपना धर्म समझती
संस्कृति और संस्कारों का परचम लहराती नारी।

आज की आधुनिक नारी
कतरा-दर कतरा जिन्दगी को संजोती नारी।
अपने आँचल में हौसलों का एहसास लिये
उम्मीदों का एक समंदर संजोती नारी।।

अनिल कुमार गुप्ता
पुस्तकालयाध्यक्ष
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय, दप्पर

46

अपना केन्द्रीय विद्यालय

अपना केन्द्रीय विद्यालय सबसे प्यारा है।
यह तो सारे जग में सबसे न्यारा है।
यहाँ न कोई ऊँचा- नीचा
भाई-बहन सब अपनें हैं।
लिख-पढ़ कर सब देश बनाएँ
यही हम सब के सपने हैं।
इसमें बहती प्रेम की धारा है।

अपना केन्द्रीय विद्यालय सबसे प्यारा है।
क्यारी में सुन्दर फूल खिले हैं।
चारों तरफ साफ सफाई है।
यही बताते गुरुजन सारे हमको
इसमें छिपी भलाई है।
ज्ञान का मंदिर प्यारा है।
तभी तो अपना केन्द्रीय विद्यालय
हम सबको सबसे प्यारा है।

पढ़-लिखकर ऊँचा उठना है।
यही हम सब का सपना है।
तभी देश को मान मिलेगा
अपने केन्द्रीय विद्यालय को सम्मान मिलेगा
सभी करेंगे देश की रक्षा
तभी हमें सम्मान मिलेगा
ऊँचा संकल्प हमारा है।
तभी तो अपना केन्द्रीय विद्यालय सबसे प्यारा है।

यह तो सारे जग में सबसे न्यारा है।
सभी देशवासियों की आँखों का तारा है।
इसीलिए तो अपना केन्द्रीय विद्यालय सबसे प्यारा है।

अजय कुमार श्रीवास्तव
पी.जी.टी. (भूगोल)
केन्द्रीय विद्यालय कानपुर कैंट

47

एक महाप्रश्न और हल

जिन हाथों में, कलम किताबें, बस्ता, तख्ती होने थे,
उन हाथों में दिया हथौड़ा, किसने बोलो, किसने जी ?
किसने बोलो, किसने जी ?

जिन नयनों में सपन सलोने, हाथ खिलौने होने थे,
जिनकी झोंपड़ के आगे, महल कोठियां बौने थे,
उन क़दमों में पग-पग रोड़ा, डाला बोलो किसने जी ?
किसने बोलो, किसने जी ?

बालश्रम मिट पाए कैसे, पैसे जब भगवान हुए हैं,
हृदयहीन अब मानव हो गए, बुद्धिधर धनवान हुए हैं,
बिना मांस के हड्डी वाले, अब बच्चे आते पिसने जी,
उन हाथों में दिया हथौड़ा, किसने बोलो, किसने जी ?
किसने बोलो, किसने जी ?

चलो एक पोथी ले लें, कलम किताबें उनको दे दें,
जीवन से अंधियार मिटा दें, सारा हा-हाकार मिटा दें,
रोती आंखों को पोंछे हम, उनको भी दें हँसने जी,
उन हाथों से लिया हथौड़ा, हमने जी, हां हमने जी।
किसने बोलो, किसने जी ?
हमने जी भई हमने जी।

घनश्याम दास
टी.जी.टी. (अंग्रेजी)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्र. 2, रुड़की

48

जीवन हर पल

जीवन हर पल, हर क्षण स्वीकृति है,
स्वीकृति... स्वयं से वार्तालाप की,
और विचलन से निर्णय तक जाने की।

जीवन हर पल, हर क्षण कृति है,
कृति... विचारों में उत्कृष्टता की,
और हर संग्राम में आत्म-सम्मान की।

जीवन हर पल, हर क्षण संस्कृति है,
संस्कृति... भावनाओं की समझ की,
और संबंधों में निश्छलता के प्रयास की।

जीवन हर पल, हर क्षण प्रगति है,
प्रगति... हर दिन,हर रात की,
और कल से आज एक बेहतर शुरुआत की।

जीवन हर पल, हर क्षण चुनौती है,
चुनौती... क्षमताओं के संपूर्ण प्रयोजन की,
और मनुष्य के मनुष्यता निभाने की।

जीवन हर पल, हर क्षण अनुभूति है,
अनुभूति... कभी कम, कभी ज्यादा मुस्कराने की,
और रास्तों से मंजिल की ओर जाने की।

जीवन हर पल, हर क्षण शक्ति है,
शक्ति... कुछ बेहतर कर जाने की,
और किसी मोड़ पर ठहरकर, फिर आगे बढ़ जाने की।

शिखा शम्भरकर
उपप्राचार्या
केन्द्रीय विद्यालय अजनी

49

पीएम श्री योजना का स्वागत

पीएम श्री योजना का, केवीएस में स्वागत है,
नवीन शिक्षा का आगमन, हर छात्र का भाग्य जगत है।
स्मार्ट क्लास, डिजिटल साधन, बनेंगे पढ़ाई का आधार,
केन्द्रीय विद्यालयों में अब, ज्ञान की बहेगी नई बयार।।

प्रवेश से स्नातक तक, हर कदम पर मिलेगा मार्गदर्शन,
पीएम श्री योजना से, शिक्षा में आएगी नई क्रांति की बहार।
प्रशिक्षित शिक्षक, उच्च गुणवत्ता होगी, शिक्षा की पहचान,
केवीएस में हर बालक बनेगा, ज्ञान का सच्चा सपूत महान।।

खेल, कला, संगीत में भी, होगा बच्चों का पूर्ण विकास,
पीएम श्री योजना से, मिलेगा हर हुनर को नया प्रयास।
शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक विकास, हर पहलू पर हो ध्यान,
केवीएस में अब होगा, हर बालक का सशक्त निर्माण।।

पर्यावरण संरक्षण का पाठ, हर छात्र को पढ़ाया जाएगा,
सौर ऊर्जा और जल संरक्षण, हर विद्यालय में सिखाया जाएगा।
हरा-भरा होगा हर परिसर, स्वच्छता का होगा अभियान,
पीएम श्री योजना से, बनेगा विद्यालय आदर्श स्थान।।

संस्कृति और परंपरा का हो, हर कक्षा में मान,
आधुनिकता संग मेल, हो शिक्षा का नया विधान।
राष्ट्र और समाज का हो, निर्माण में सहयोग,
पीएम श्री योजना से, बनेगा हर छात्र का संयोग।।

विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, हो हर कदम पर साहस,
पीएम श्री योजना से, हर प्रयास हो सफलतम प्रयास।
केन्द्रीय विद्यालयों में, शिक्षा का नया सवेरा,
पीएम श्री योजना से, हर सपना होगा पूरा।।

पीएम श्री योजना का, केवीएस में स्वागत है,
नवीन शिक्षा का आगमन, हर छात्र का भाग्य जगत है।
हर बालक का सपना अब, साकार हो जाएगा,
केवीएस के विद्यालयों में, नया अध्याय रचा जाएगा।।

महालक्ष्मी पाण्डेय
प्राचार्य
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्र.1 रीवा

50

ईमान है, तो है सब कुछ

ईमान से भरा हो अपना मन,
चले हरदम मर्जी से ही अपने।
आते हों भले मौसम लुभावने,
प्रलोभन की शक्ति आजमाने।
देख ऐसे मायाजाल जो बिखरे,
लालच का अहसास न छू ले।
कि ईमान है, तो है सब कुछ।

मानव है, हो सकती गलती,
किंकर्तव्यविमूढ़ता की स्थिति।
न गिरे, न हिले, चट्टान जैसे,
ईमान कभी न डगमग होवे।
जब नापे आधे औने-पौने,
बस ईमान ही सच्चा लागे।
कि ईमान है,तो है सब कुछ।

आखिर है क्या, इस ईमान में,
साथ जिसके ही हों सदा हम।
हो संतुष्टि और गर्व स्वयं पर,
आगे इसके सारे सुख बेदम।
और कोई न देखे, न जाने,
साखी ईशतुल्य अंतस् मन।
कि ईमान है,तो है सब कुछ।

मनीष कुमार गुप्ता
पी.जी.टी. (सीएस)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्र.2 सागर

51

चिन्तन की सरगम

ये चिन्तन की ही सरगम है, जो जीवन की रवानी है।
यही सुख-दुख का कारण है, यही सम्पूर्ण कहानी है।
सदा चिन्तन ही कारण है, निवारण भी है सुख-दुख का
धड़कता मन जहां जितना, वही है सबब जीवन का।।

सदा वहीं चाहे मन रहना जहाँ प्रेरक नजारा हो,
तरंगित कर स्फूर्तिदायक ही पावन चिन्तन-धारा हो।
लेशभर भी न उलझे मन वैर-नफरत बुराई में
सकारात्मक आशावादी, भरी ऊर्जा हो नस-नस में।।

सोच अनमोल धन-वैभव, कहां कोई याद रखता है?
सोच से स्वास्थ्य, बल-बुद्धि, मगर कोई ध्यान न रखता है।
क्षणिक सुख-लालसा का व्यर्थ क्यों, मन! चिन्तन करता है?
सोच बदले तो कण-कण ही, सदा आनंद बरसता है।।

हर एक पल आनंद-वृष्टि हो, प्रफुल्लित पुलकित तन-मन हो
सदा मंगल-ध्वनि गूंजे, सोच सुन्दर हो मनोरम हो
विलक्षण शौर्य और सामर्थ्य, पर ही गर्व हो सबको
उमंग-आशा का ही संदेश दे, यह चिन्तन हम सबको।।

डॉ. केशव देव
पी.जी.टी. (हिंदी)
केन्द्रीय विद्यालय रिओना उच्चा, फतेहगढ़ साहिब

52

टूटकर आकाश में

टूटकर आकाश में,
बिखरा कोई फिर दीर्घ तारा।
भरभराकर गिर पडा,
ऊंचा कोई पर्वत सिधारा।

इस जगत में, जाने कितने,
गहन सागर पट गए हैं।
अंगदी पद अडिगतम भी,
काल के वश, हट गए हैं।

जो कभी राई नहीं था,
वह हिमालय से बड़ा है।
फिर उसी की चोटियों पर,
सबल मानव ही चढ़ा है।

जो चढ़ा है, चोटियों पर,
वह पुनः भूतल पे आता।
तब कहीं अनुभव भरा हो,
कथ्य जीभर है सुनाता।

अंत के एकांत में फिर,
दीर्घ सांसे छोडता है।
निठुर चक्कर काल का है,
जोड़ता, फिर तोड़ता है।

आखिरी इस मोड़ पर भी,
आस के किसलय गमले हैं,
सांझ का सच जानकर भी,
फूल यह देखो खिले हैं।

आलोक कुमार
पी.जी.टी. (अंग्रेजी)
केन्द्रीय विद्यालय बी.एस.एफ. बांदीपुर

53

कल भी सूरज निकलेगा

जब रात की कालिमा चीर कर
अगले दिन सूरज उगता है
नव दिवस, नई चेतना
नव आयाम दमकता है।

पूर्व भोर की वेदना दर्दनाक
चाहे दोपहर की व्यथा वृहत
संध्या का संकट पीड़ायुक्त
पर नव-दिन आगमन निश्चित!

असफल परीक्षा में हो गए निराश?
मिला नहीं- तो परित्याग तलाश?
जीवन ही अनमोल धरोहर
जीना ही तो परम प्रकाश!

संभावनाओं का सागर है जीवन
विकल्पों का भण्डार भी है
आशाओं की नगरी है ये
उपलब्धियों का दरबार भी है

असफल आज, तो कल सफल
निरुत्तर आज, कल मिलेगा हल
मार्ग नही अब, भविष्य शायद राजपथ
हताश न हो तो कल निश्चित समर्थ

रहोगे जीवित तो सकोगे जीत
वीराने में भी मिलते मीत
फिर जोश भरो, फिर करो हिम्मत
दृढ़ निश्चय तेरा, तेरी ताक़त।

जब कष्ट का आवरण त्याग कर
अगले दिन फिर कोई जूझता है
नव आस, नई विश्वास, नव श्वास
नव साहस से चमकता है।

पुष्पा शर्मा
प्राचार्य
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय धर्मशाला छावनी

54

यह पल गुजरेगा, गुजरना ही है

यह पल गुजरेगा,
गुजरना- ही- है,
जिन्दगी अभी तुझे,
संवरना - भी- है,
हवा -की- सुनहरी,
लाली -लिपस्टिक,
बहना –है- थोड़ा,
ठहरना – भी- है,
यह पल गुजरेगा,
गुजरना- ही- है,
जिन्दगी अभी तुझे,
संवरना- भी- है।

अभी पर्वतों की,
सगाई, बची -है,
बादलों तक, गहरी,
एक, जम्हाई, सजी है,
गुलमोहर- कब के,
खड़े है, ओढ़नी में,
रास्तों पर ठहरी,

तन्हाई-ढँकी है
कुछ आँखों को,
खुलना है, खिलना भी है,
यह पल गुजरेगा,
गुजरना- ही- है,
जिन्दगी अभी तुझे,
संवरना – भी- है !

चलो - इस दौर को,
चुहल सा, समझ लें,
तुम- हमें, थाम लो,
हम तुम्हारा, सबक लें,
मिलकर- आँगन में,
गरारे - रोशनी – के,
नर्म - एक - नज़ाकत,
भीनी - महक - लें,
पानी - है, पोथी - है,

बिखरना भी है,
यह पल गुजरेगा,
गुजरना- ही -है,
जिन्दगी अभी तुझे,
संवरना - भी- है

अवनि प्रकाश श्रीवास्तव
प्राचार्य
केन्द्रीय विद्यालय बैकुंठपुर

55

क्यों ना जीत जाऊँ, मैं हर बार

कच्ची नींद हो या तुफानों का सवेरा,
भागती जिन्दगी या कठिनाईयों का खेला,
रोज़ नई दिशा पाता है जीवन ये मेरा

चहचहाती चिड़ियो से सीखा बहुत,
खुले असमान में निर्भय बसेरा,
जब चाहू तब पाऊ मै सब्र का सवेरा

न चिंता, न फिक्र, न डर है अब कोई
हर तरफ है संतुष्टि का जैसे मंज़र कोई
नई अभिलाषा सी है अब थकान में मेरी

जतन है जीवन ख़ुशी से जीने का हमारा
कमज़ोर दिल है पर हौसलो का है सहारा
आसमां पाने सुनहरा ख्वाब है हमारा

माना जीवन कुछ खट्टा कुछ मीठा सा है
लेकिन फिर भी इसमें बहती एक मधुर रसधारा है
हारना मंजूर नहीं क्योकि जीतना मकसद हमारा है।

सीमा शर्मा
वरिष्ट कार्यालय सहायक
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय क्र. 2 फरीदाबाद

56

कुछ काम अमर कर जाना साथी

है सूर्य उदय होने को अब, तुम तम से मत घबराना साथी।
संघर्षों का नाम है जीवन, बहती धारा बन जाना साथी।
फिर अपने दम पर अमर तिरंगा, लहर-लहर लहराना साथी,
कुछ काम अमर कर जाना साथी।

बाधाएँ कई आएंगी, तुम झुकना मत, मुश्किल टल जाएंगी।
संकल्पों के कल्प डगर पर, जमकर के उड़ जाना साथी।
तुम बस अपना फर्ज निभाना साथी।
फिर अपने दम पर अमर तिरंगा, लहर-लहर लहराना साथी,
कुछ काम अमर कर जाना साथी।

हम काम किसी के आ जाएँ, जो रोता हो हँसा जाएँ।
यह जाति धर्म की बात नहीं, कई लोग युगों तक जिंदा हैं।
तुम ऐसे मत मर जाना साथी, कुछ काम अमर कर जाना साथी।
फिर अपने दम पर अमर तिरंगा, लहर-लहर लहराना साथी,
कुछ काम अमर कर जाना साथी।

माना सब डावाँ-डोल मिला पर, यह जीवन हमको अनमोल मिला।
बलिदानों में कर्तव्यों के अधिकारों की बात उठे तो,
कर्मठता से कुछ अद्भुत कर जाना साथी, बन प्रहरी तन जाना साथी।
फिर अपने दम पर अमर तिरंगा, लहर-लहर लहराना साथी,
कुछ काम अमर कर जाना साथी।

मनोहर साहू
पी.आर.टी.
केन्द्रीय विद्यालय क्र.2, रायपुर

57

मेरी बेटी मेरा अभिमान

एक दिन बापू ने मेरे, पास आ मुझसे कहा।
तुम पराया धन नहीं, अभिमान हो मुझसे कहा॥
घर यह तेरा ही रहेगा, खुशबू से हरदम सजेगा।
कोई भी संकट जो आए, गैर जो उंगली उठाये।
बेझिझक तुम लौट आना, द्वार ने मुझसे कहा॥

एक दिन बापू ने मेरे, पास आ मुझसे कहा।
कोई निर्णय ले सको ना, रस्म में भी बंद सको ना।
दिल के तारों का चटकना, मन में फिर सैलाब उठना।
उस उफनती धार में, बहना नहीं मुझसे कहा॥

एक दिन बापू ने मेरे, पास आ मुझसे कहा।
डगमगाए यह कदम तो, रिश्तों में जब दम घुटे तो।
हर पहर अंतिम लगे जब, जिंदगी खारी लगे जब।
अंगना की तुलसी पुकारे, लौट आ बिटिया जरा॥

एक दिन बापू ने मेरे, पास आ मुझसे कहा।
अपनी क्षमता को परख लो, चाहो तो आंधी को पी लो।
कितने भी तूफान आए, यह कदम न डगमगाए।
बिखरे तिनको को सजा, नव सृष्टि कर मुझसे कहा॥

एक दिन बापू ने मेरे, पास आ मुझसे कहा।
इसके बाद बेटी अपने पिता को आश्वस्त करती है
आज मैं करती हूं वादा, हार ना मानूंगी मैं।
टूटे तारों के बसंती, स्वर से भी गाऊँगी मैं।

चीर कर पत्थर की छाती, अंकुरण बोऊँगी मैं।
मुझको दिखती अरुणिमा, अब कौन रोकेगा मुझे।
यज्ञ आहुति बिना, पूरा हुआ है कब भला।
देख तूफानों का तेवर, चुप नहीं बैठूंगी मैं।
यह चुनौती अब है मेरी, मैंने बापू से कहाय।
मैं पराया धन नहीं, अभिमान हूं मैंने कहा॥

उमा उपाध्याय
पुस्तकालयाध्यक्ष
केन्द्रीय विद्यालय डबरा

58

संवेदना से भरा: संवेदना से शून्य

संवेदना से भरा मानुष! क्यूं तू संवेदना शून्य है?
मिली देह, मिला विवेक, फिर भी, क्यूँ तेरी चेतना न्यून है?

विकास पथ पर बढ़ चले हम, किंतु किञ्चित् मद है भरा।
भावी पीढ़ी को विरासत में हम क्या देकर जाएंगे? सोचा है ज़रा।

हमें पुरखों ने जो कुछ धरोहर में दिया,
उसका शुद्ध रूप लेश मात्र भी बचा है क्या?

वन-उपवन, वाटिका में, जो बहती थी शुद्ध हवा,
दूषित कर हम उनको, सौगात में देंगे कैसी फिज़ा?

नदियों, झरनों में बहता था कल-कल करता शुद्ध पानी।
शुद्ध को अशुद्ध करके, की हमने अपनी मनमानी।

आज विकास की विडंबना देखो, चंद्रमा पर पहुंचा रहें हम यान।
घर में बैठा जो चंद्र-सरीखा, उसके कोमल मन पर नहीं जाता हमारा ध्यान।

सुख-सुविधा के सब साधन हमने बेशक उनको जुटा दिए।
कोमल कल्पित मन क्यों हमने, यंत्र-तुल्य हैं बना दिए?

उस पर सीनाज़ोरी हमारी देखो,
जीवन की असफलताओं के इल्ज़ाम भी उन पर लगा दिए।

हम अपनी विरासत का गुणगान कर, अक्सर गर्वित हो जाते हैं।
क्या भविष्य देकर जा रहें हम भावी पीढ़ी को? शायद यह भूल हम जाते हैं।

बैठ शांत चित्त कर सको तो देना थोड़ा इस बात पर ध्यान।
आने वाली पीढ़ी, हमारी किस बात का करेगी गुणगान?

अपने-अपने आकाशों में, सपनों की उड़ान भरने को आकुल।
निरी आंखें जब कभी प्रश्न करती हैं होकर व्याकुल।

अक्सर निःशब्द होकर मन के कोने में बैठी संवेदना, दबी आवाज में कहती है
संवेदना से भरा मानुष! तू क्यूँ संवेदना शून्य है?
मिली देह, मिला विवेक, फिर भी, क्यूँ तेरी चेतना न्यून है?

तरुणा शर्मा
टी.जी.टी. (संस्कृत)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय गज्ज भुंगा

59

दादी मां

दादी मां के बारे में चिंता करने वाले
दादी मां का ख्याल रखने वाले
बच्चे! प्यारे-प्यारे बच्चे! कहां गुम हो गए एकाएक
कहां गए दादी मां की लोरी सुनने वाले बच्चे?
कहां गए दादी मां का हाथ पकड़कर
उनके साथ चलने वाले बच्चे?

आज किसी भी बच्चे को फुर्सत नहीं है कि
वह अपनी दादी मां के साथ उठे-बैठे
उनके सुख-दुख के बारे में बात करें
उनकी लोरी सुने, उनके साथ मस्ती करें
ताकि कट सके उनका बुढ़ापा आसानी से

आज के बच्चे लगे मोबाइल पर
यूट्यूब देखने, कार्टून चैनल देखने
उन्हें नहीं है मतलब दादी की लोरी से
सीख रहे हैं आज के बच्चे यंत्र बनना
भावनाओं के साथ खिलवाड़ करना

नहीं बची किसी को भी फुर्सत
दादी के साथ मस्ती करने की
गायब है उसके सुख दुख को समझने की कोशिश
आज गुमनाम दुनिया में खोता जा रहा है बच्चा
अब दादी मां के बचपन को वही ढूंढ सकते हैं
जो समझते हैं अपनी दादी को, उसके प्यार को, दुलार को
जो जीना चाहती है अपना खोया हुआ बचपन।

सुरेश चंद शर्मा
पी.जी.टी. (हिंदी)
केन्द्रीय विद्यालय मथुरा छावनी

60

अनूठा नारियल

प्रकृति का यह अनुपम उपहार,
पोषक तत्वों का अक्षय भंडार।
हरित आवरण से आच्छादित,
तरल मधुर सुकोमल फल
अनूठा नारियल महिमा अपार।

रत्नाकर की लहरों से पालित,
सुंदर सुकुमार तरु का हार।
सख्त भूरे चादर से आवृत,
विमल हृदय सम्मोहन फल
अनूठा नारियल महिमा अपार।

महादेव का त्रिनेत्र प्रतीक यह,
प्रभुचरणों का प्रिय प्रसादामृत यह,
मंगल कार्यों की महान अर्चना यह,
प्रकृति -घर का प्रिय वरदान
अनूठा नारियल महिमा अपार।

इत्र, साबुन और तेल का वैविध्य इस में,
करता यह नाज़नीनों का प्रिय शृंगार,
पेय -खाद्य पदार्थों में करता जब यह कायापलट,
भूख और प्यास मिटाकर बनता यह 'सुपर फूड',
अनंत शक्ति का अविरल स्रोत-आधार,
अनूठा नारियल महिमा अपार।

के. सुनीता
टी.जी.टी. (हिंदी)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय एरणाकुलम

61

हार से न हार मान

हारता यहां वही जो हार मन से गया,
हार को गले लगा तो हार 'हार' बन गया।
हार को निरख लिया तो हार राह बन गई,
हार को परख लिया तो रात स्याह ढल गई।

हार जीत का ये चक्र, चक्रव्यूह मानिंद है,
हार से गया जो हार सर्वथा ही निन्द्य है।
'धीर' वीर का वसन ज्यों केसरी अयाल है,
शस्त्र त्याग का विचार भीरु का ख्याल है।

हार मात्र के ही भय से रण में न जाये जो,
मनुष्य की ही कोटि में हैं कभी गिना न जाये वो।
न हो सभय, तू बन अभय सकल सफल भविष्य है,
तू जीव के परमार्थ रूपी यज्ञ का हविष्य है।

प्राण के बचाव में या जिंदगी के चाव में,
क्यों बन रहा वो मक्षिका जो बैठती है घाव में।
सुन! हेय दृष्टि से धरा भी तुझको निहारेगी,
सच! जननी धरा पे तेरी उसी दिन हारेगी।

कोख को कलंक से औ अंक को इस दंश से,
सच ! है समर्थ रोक ले तू माँ को विध्वंस से।
ईश्वर की हर कृति विश्व में है नाशवान,
डरता है क्यों सभी ही हैं यहाँ मेहमान।

तू बना न राशन की पंक्ति में शरीक होने,
भेजा गया जग में है तुझे नए बीज बोने।
जग में रतन जो भी जन के जतन से ही,
हार जैसा पाप प्रिय मन के पतन से ही।

सांस तेरी अंतिम हो अंत न प्रयास का हो,
वही क्षण शायद से जीत की सुवास का हो।
जीत की जो चाह हो तो सच में तू जीतेगा,
मन से तू लड़ हार का भी पल बीतेगा।।

रवि कुमार
टी.जी.टी. (हिंदी)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय पय्यन्नूर

62

दीपक का संदेश

दीपक की उठती लौ हमें,
ऊपर उठना सिखाती।
खुद की रोशनी से सबको,
रोशन करने का मार्ग दिखाती।।

जलती हुई बत्तियाँ इसकी,
जगाती हमारे दिल में त्याग।
द्वेष और इर्ष्या को ऐसे जलाओ,
जैसे बत्तियों को जलाती यह आग।।

दीपक में पड़ा तरल, इसे ही
अपनी सीमा मान हर्षाता।
ऐसा कर्म करके यह,
विनम्रता का भाव दर्शाता।।

मृदा से बना यह दीपक,
परिवर्तनशीलता की राह दिखाता।।
ऊर्जा के नव-निर्माण में,
संगत असर की गाथा लिखवाता।।

हर कदम पर मिलते इससे,
अच्छे-अच्छे प्यारे सन्देश।
जो आपस में जुड़कर, कराते
'अमर' दिल में सद्भाव का समावेश।।

अमर मणि त्रिपाठी
टी.जी.टी. (हिंदी)
पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय आयुध निर्माणी, रायपुर

63

प्रेरणा

प्रेरणा मिशन है एक सोच,
विकसित भारत की तैयार करने को फ़ौज।

हर बालवीर के मन में जगाने नौ गुण,
जो है माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के जीवन के मूल।

मेरे भारत की नई पीढ़ी के नौजवानों,
तुम भी अपनी जीवन में इन नौ गुणों की ज्योति जला लो।

जीवंत नगरी वड़नगर की कहानी सुनते जाओ,
दूसरों को भी अपने अनुभवों की कहानी सुनाओ।

भारत के महापुरुषों के जीवन मूल्यों को
अपने जीवन की प्रेरणा का स्त्रोत बना लो।
स्वयं भी दूसरो की प्रेरणा बनो,
अपने भारत को विकसित बना लो।

स्वाभिमान और विनय अपने जीवन में लाओ,
शौर्य और साहस के साथ आगे बढ़ते जाओ।

सत्यनिष्ठा और शुचिता से अपनी साख बढ़ाओं,
परिश्रम और समर्पण से अपना जीवन सबके लिए जीते जाओ।

करुणा और सेवा का भाव सदा ही अपनाओ,
विविधता और एकता की माला को मजबूत बनाओ।

नवाचार और जिज्ञासा से नित अपना ज्ञान बढ़ाओं,
श्रद्धा और विश्वास का अपने व्यक्तित्व में बीज रोपाओ।

स्वतंत्रता और कर्तव्यों की महत्ता को जानो,
विकसित भारत की मंज़िल को पा लो।

अपने अनुभवों से जीवन भर सीखते जाओ,
स्वयं भी आगे बढ़ो दूसरों में भी आगे बढ़ने की प्रेरणा जगाओ।

ममता यादव
पी.आर.टी.
केन्द्रीय विद्यालय प्रगति विहार

64

शब्दों की ताकत

शब्दों का अर्थ से नाता है गहरा,
शब्दों का भावों से रिश्ता घनेरा।

शब्दों के जाल में मानव है उलझा,
शब्दों की डोरी संबंध है सुलझा।

शब्दों के तीरों ने महाभारत रचा है,
शब्दों के मोती से मानस सजा है।

शब्दों के नश्तर घाव हैं देते,
शब्दों की मलहम सुकून भी देती।

शब्दों के चंदन से होता है आदर,
शब्दों के अहं से होता निरादर।

शब्दों के धागों से सियासत बुनी है,
शब्दों के काँटों ने नफरत चुनी है।

शब्दों को सोचो फिर मुंह से बोलो,
शब्दों की ताकत को तुम कम मत तौलो।

अपर्णा दुबे
टी.जी. टी. (विज्ञान)
केन्द्रीय विद्यालय गढ़ा

65

क्रोध

होता जब कुछ भी नहीं, इच्छा के अनुसार।
ज्वाला भड़के क्रोध की, मन में उठे विकार।।

तीव्र रूप से क्रोध का, मन में हो तूफ़ान।
होता निश्चित रूप से, खुद का ही नुकसान।।

वश में होकर क्रोध के, करता दुर्व्यवहार।
गलती हो खुद की मगर, बनता साहूकार।।

क्रोध भयंकर रोग है, मानो मेरी बात।
जीती बाजी हारते, खाते सबसे मात।।

बिना किसी भी बात के, जो करते हैं क्रोध।
राहों में उनकी सदा, आते हैं अवरोध।।

बार-बार आता जिसे, बिना बात के क्रोध।
उसमें बिल्कुल भी नहीं, नाममात्र का बोध।।

मन में शोला क्रोध का, भड़के जैसे आग।
तब बदले की भावना, मन में उठती जाग।।

क्रोधित होकर भूलते, सही गलत का फर्क।
बने बनाए काम का, करते बेड़ा गर्क।।

आपा खोकर क्रोध में, जो करता है पाप।
होता निश्चित बाद में, उसको पश्चाताप।।

मन में जब गुस्सा उठे, लेना गहरी सांस।
गुस्सा होगा शान्त तब, है मुझको विश्वास।।

क्रोधित जो होते नहीं, जो रहते हैं शान्त।
सोने से होते खरे, उसके सब सिद्धान्त।।

दिल में करुणा प्यार जब, हो जाते उत्पन्न
क्रोध मुक्त परिवेश में, रहते सभी प्रसन्न

मनोज शर्मा
सहायक अनुभाग अधिकारी
केन्द्रीय विद्यालय वायु सेना स्थल बरेली

66

मुस्कुराते रहिए

खजाने खुशियों के जी भर के लुटाते रहिए,
ज़िंदगी छोटी सी है यार, मुस्कुराते रहिए।

यूं तो कोई दामन ग़म से खाली नहीं,
गीत मनपसंद गुनगुनाते रहिए।

यहाँ अपनों को गिराने वाले हैं बहुत,
देके सहारा गैरों को उठाते रहिए।

देखना कोई अपना हमसे रूठे नहीं,
ज़िंदगी के फ़लसफे सुलझाते रहिए।

माना कि दर्द कई बार छलक उठता है,
अपने मायूस न हो, अश्क छुपाते रहिए।

जीत हर बार मिले हमको जरूरी तो नहीं,
हार को जीत का सोपान बनाते रहिए।

क्या पता कौन सा पल आखिरी हो जाए,
दिलों में प्यार का एहसास कराते रहिए।

मानकर खुद को ख़ुदा का जरिया,
ज़िंदगी में खुशी के दीप जलाते रहिए।

योगेश कुमार जैन
पुस्तकालयाध्यक्ष
केन्द्रीय विद्यालय संगठन- ज़ीट ग्वालियर

67

कर्तव्य गान

राष्ट्र के उन्नयन की थाती बनेंगे
हम सभी विद्या की परिपाटी बनेंगे

सूर्य से सीखेंगे अपनी रश्मियां करना प्रसारित
चंद्रमा से ज्ञान के अभिमान का शीतलन लेंगे

वृक्ष से परहित धरम की मूल परिभाषा गढ़ेंगे
सीखकर ममता धरा से आचरण अपना धरेंगे

ज्ञान के दीपक की हम बाती बनेंगे
हम सभी विद्या की परिपाटी बनेंगे

हम कभी कोरे नहीं थे किंतु हममें थी विविधता
हम सभी ऊंचाइयों पे लायेंगे अपनी आधुनिकता

देश की संस्कृति को पूरे विश्व की पहचान देंगे
देश के दुर्दिन क्षणों में देश हित में जान देंगे

विश्व भर में स्नेह सौगाती बनेंगे
हम सभी विद्या की परिपाटी बनेंगे

आचरण में कुशलता हो बोलने में मुखरता हो
विश्व के प्रतिनिधि पटल पर उभरने की योग्यता हो

हृदय नित संकल्परत हो फहरता हो जय पताका
पात्रता हो ज्यों अधिक त्यों ही स्वरों में नम्रता हो

दीन दुखियों हेतु जज़्बाती बनेंगे
हम सभी विद्या की परिपाटी बनेंगे

वीरेश कुमार पाण्डेय
पी.आर.टी.
केन्द्रीय विद्यालय बहराइच

68

मेहनत का फल

कड़ी मेहनत और सच्ची लगन का, मन में रखो इरादा
लक्ष्य को हासिल करने का, खुद से कर लो वादा
दृढ़ इच्छा शक्ति लेकर, कर्तव्य पथ पर चल
सफलता की राह दिखाता, मेहनत का फल।

हाथों में श्रम की ताकत से, भाग्य की रेखा बनाना है
कर्म प्रधान जीवन शैली पर, हमकों विश्वास दिखाना है
जैसी करनी वैसी भरनी, आज नहीं तो निश्चित कल
जीवन में जीत दिलाता, मेहनत का फल।

आलस के तम को त्यागकर, काम से उजियारा लाओ
पसीने की बूंदों से, सफलता को सींचते जाओ
बाजुओं के बल पर, बढ़ता चल हर पल
जीवन में तरक्की लाता, मेहनत का फल।

मंजिल के मिलने तक, पग में थकान नहीं
मार्ग में चलते जाओ, मत रुको कही
गति, ऊर्जा और बल लेकर, बहते जाओ नदी सा जल
जीवन में सम्मान दिलाता, मेहनत का फल।

ओमप्रकाश चंद्राकर
पी.आर.टी.
केन्द्रीय विद्यालय महासमुंद

69

स्त्री का नौकरी करना

स्त्री का नौकरी करना भी कहां,
आसान है दोस्तों
नौकरी परिवार से दूर रहकर करे, तो एक बहुत बड़ी चुनौती।
परिवार के साथ रहकर करें, तो भी चुनौती।

दोस्त, सहकर्मी से हंस कर दो बात क्या कर ली,
शक के घेरे में खड़ी कर ली।
देर रात बाहर क्या निकल ली?
भूखे भेड़ियों ने ग्रास बना ली।
स्त्री का नौकरी करना भी
कहां, आसान है दोस्तों?
नौकरी परिवार से दूर रहकर करे, तो एक बहुत बड़ी चुनौती।
परिवार के साथ रहकर करें, तो भी चुनौती।

परिवार की अपेक्षाओं पर खरी न उतरी,
तो संस्कार से तर ली।
बच्चों की फरमाइशें पूरी न की,
तो मातृत्व जिम्मेदारी से हट ली।
पति के आदेश न माने,
तो पत्नी धर्म से तर ली।
नौकरी परिवार से दूर रहकर करे, तो एक बहुत बड़ी चुनौती।
परिवार के साथ रहकर करें, तो भी चुनौती।

अपने सपनों को समेटे,
अपने अरमानों को समेटे,
ऑफिस में पहुंच जाती है,
सरकारी आदेशों को निभाने।
नौकरी परिवार से दूर रहकर करे, तो एक बहुत बड़ी चुनौती।
परिवार के साथ रहकर करें, तो भी चुनौती

अपने सपनों को समेटे,
अपने अरमानों को समेटे,
शाम को घर पहुंच जाती है,
अपनी जिम्मेदारियों को निभाने।

संतोष देवी
टी.जी.टी. (हिंदी)
केन्द्रीय विद्यालय क्र.2 नौसेनाबाग

70

रिश्तों के इंद्रधनुष

रिश्तों के रंग है बदलते, हर पल बनते, हर पल बिगड़ते।
जीना सिखाते हैं यह रिश्ते, मान बढ़ाते हैं यह रिश्ते।

प्यार जताते यह प्यारे-प्यारे रिश्ते, नित नयी राह दिखाते हैं ये रिश्ते।
कभी यादों की धुंध में खो जाते, कभी सुबह की भोर में जागते।
कभी भूत की परत हटाते, कभी भविष्य का मार्ग बनाते हैं यह रिश्ते।

संसार में कदम रखते ही बन जाते अनेक रिश्ते,
संसार से जाने तक बदलते रहते कितने रिश्ते।
विचारों की समानता और विषमताओं से उन्नत हुए रिश्ते,
दोस्ती के रिश्ते, दुश्मनी के रिश्ते, अटूट रिश्ते, क्षणभंगुर रिश्ते।

जिनमे बंधे रहना चाहते हैं, जिनसे छूटना चाहते हैं ऐसे रिश्ते
विश्वसनीय रिश्ते, विश्वासहीन रिश्ते, समकालीन रिश्ते, लेन देन के रिश्ते।
हर पल एक नई सीख दे जाते यह रिश्ते,
हर पल एक नई परीक्षा ले जाते यह रिश्ते।

प्यार-दुलार, आदर-सत्कार, आत्मीयता-विश्वसनीयता सिखलाते हैं यह प्यार रिश्ते।
जात-पात, वाद-विवाद,कटुता-तिरस्कार दूर करते हैं यह रिश्ते।
कुछ दिलों को कड़वाहट से भर देते,
कुछ मीठी सी यादो से मुस्कुराहट बिखेरते यह अनोखे रिश्ते।

किसी को दिलों की गहराईयों में बसाते,
किसी से सीमाओं से भी लम्बे फासले बना देते, यह रंग बदलते रिश्ते।
अहंकार से बिगड़ते, प्यार से बनते यह रिश्ते,
कभी अटूट तो कभी टूट कर भी जुड़ जाते।
ईश्वर से यही है प्रार्थना,
हर रिश्ते में बढ़ता रहे प्यार, हर रिश्ता देता रहे खुशियाँ अपार।

श्रुति श्रीवास्तव
पी.जी.टी. (सीएस)
केन्द्रीय विद्यालय ओ.एन.जी.सी. पनवेल

71

महिमा तेरी निराली

कितना नुकसान हुआ होगा बनाने में तेरे, आईने टूट गए कितने सजाने में तेरे,
सौ बार बनाया मालिक ने, सौ बार मिटाया होगा, तब तेरा रूप इस रंग मे आया होगा।

दुनिया बनाने वाले महिमा तेरी निराली,
चंदा बनाया शीतल, सूरज में आग डाली
ऊंचे शिखर गिरों के आकाश चूमते हैं,
वृक्षों के झुरमिटे भी वायु में झूमते हैं।
सरिताएं बहती कल-कल शीतल सी नीर वाली
चंदा बनाया शीतल, सूरज में आग डाली।।

कहीं वृक्ष हैं रसीले, कहीं झाड़ हैं कटीले
कहीं रेत के हैं टीले, सरोवर कहीं हैं नीले।
ये आसमान देखो, कैसी सजी दिवाली,
चंदा बनाया शीतल, सूरज में आग डाली।।

सब प्राणियों के जग मे तुमने बनाए जोड़े,
दुर्जन अधिक बनाए, सज्जन बनाए थोड़े।
घोड़े बनाए तुमने, सिंह, हाथी शक्तिशाली,
चंदा बनाया शीतल, सूरज मे आग डाली।।

बच्चे किसी के दर्जन, टुकड़ों के भी हैं लाले,
संतान बिन किसी के घर पर लगे हैं ताले।
यूनान का सिकंदर गया करके हाथ खाली
चंदा बनाया शीतल, सूरज में आग डाली।।
दुनिया बनाने वाले महिमा तेरी निराली

राज कुमार
सब स्टाफ
केन्द्रीय विद्यालय संगठन (मुख्यालय)

72

A Soul Free of Sins

I was writing, writing, sitting in a corner,
Thinking continuously, but no longer,
What I'd been doing for so long,
Certainly pretending to be stupidly strong,
As I wanted to create some waste bins,
To throw away my bad stories, regrettable sins,
To throw away my bad memories into those bins,
To make my soul free of sins.

My inner peace was destroyed,
As I'd spent my life being void,
My thoughts were so unclear,
Non-colloquial under a dark fear,
I tried so hard to make them right,
But I couldn't win against my fright,
But apparently, now I am strong enough to show
To put in extreme efforts to grow,
Now, no one can put me into any province,
I am soulfully free from all of my sins.

Ekta Rawat
PRT
PM SHRI KV No. 1 Udhampur

73

Concept of happiness

Different is what makes me happy, from many others;
A small flower, an infant's face, a drop of rain, a gentle breeze
The warmth of sunlight, the never-ending azure of the sea or the lullaby of a brook
Can fill me with waves of ecstasy immeasurable and fathomless.

A shade of nature is enough to cast a rainbow of delightful brilliant crystals,
That inexplicable feel of glee from simple and ordinary everyday things
You too may capture and comprehend in life, now or as days and years go by.

Tangled am I not, in the everyday mad rush for benefits and profits;
Never do I want to make or create impressions or expressions
On anything or everything, anyone or everyone, anywhere or everywhere.

No interest either to make people believe that all is well or unwell!
Nor am I conquered and carried away by the normally believed norms of happiness –
The offshoots of wealth, gains, accolades, luxuries or skin-deep thrills!
A good book, a hearty meal, a children's innocent smile, a friend's warm hello, a melodious song or sylvan surroundings
My mother's kiss, my father's hug, my bestie's pat, a cute cat's meow, a simple movie, my kid's messages.

A little dog or any baby animal, a cute birdie, a leaf or a good view of the sky or a green field or a good class taken.
Anything and everything simple and humble, offers me my unparalleled beautiful world of joy!
A matter of choice and attitude is our happiness!
Our notions others may or may not accept or follow, praise or ridicule!
All in our mind is it and how we look at things and consider the hapless ones around.

Certain things, people, bonds or awards we may lose, sometimes forever…
But, trust me - those are taken away by our Lord and Master,
Difficult to grasp now why, but may dawn upon us immortals later -
It is to give us the very best and to make our life all the more beautiful!

So never ever measure a heart's happiness or peace,
By our yardsticks, chains of broken beliefs or conditioned minds
For whom we may think of as the saddest soul and an utter failure,
May be the happiest of all and the most contented -
Something which riches, power, position or influence can never ever purchase!

Realising the pinnacle of bliss in one's own heart
And conquering the peak of peace in one's own soul
Through kind words, love, mutual respect, care, good attitude and understanding of others
Those acquired, inculcated and cultivated qualities of thoughts and deeds to help others
Are all that matter ultimately the most in life for never-ending happiness!

Ciny Sivasanker
PGT (English)
KV Konni

74

The Wall Lizard

It is the TIGER of wall,
Seems somehow a few inches tall.

It has four camel like paws,
Which help to bring work for its jaws.

It runs on horizontal and vertical,
Moves easily on roof without an obstacle.

It has a small tail, which helps it in its journey,
It uses it to make Fool of its enemy.

It is the BOLT of wall,
It runs fastest of all.

When it sees its prey,
It reaches it soon without a delay.

Stops, Sees, Senses, before it pounces,
Does not give opponent any chances.

Swallows the prey, like a snake,
Few seconds are needed for intake.

Keeps itself busy, does not take rest,
After feasting on one, moves to next.

Swarn Singh
TGT (English)
PM SHRI KV Dharamshala Cantt

75

Healing Nature

Thou – the mourning days.
When I saw the sun ablaze,
Menacing and scorching,
Dawning as it glares.

Thou – the glooming skies.
When I saw the darkest night,
Horrifying and daunting,
Alarming as it scares.

Thou – the sulking gale,
When I heard the hushing air,
Fainting and meeking,
Creeping as it stares.

Thou – the choppy shores,
When I heard the noisy chores,
Turbulent and sparkling,
Furious as it explores.

Thou – the quiet nature,
When she felt sad and dire,
Straining and striving,
Healing herself in despair.

S V S Gayatri
PRT
KV Durg

76

Echoes of Learning: A Tribute to KVS

In halls where young minds weave their tales,
Echoes of learning fill the air,
Where teachers guide with patient care,
And students dream of futures rare.

In classrooms bright with eager eyes,
Knowledge blooms beneath the skies,
Lessons taught with passion's fire,
Ignite within each heart's desire.

From chalkboard wisdom to digital code,
In the journey where thoughts explode,
Curiosity fuels the quest,
For wisdom's gold, they do their best.

Amid the bustle, friendships grow,
In shared moments, spirits glow,
With each challenge, they rise and learn,
In every corner, knowledge churns.

Within the walls of KVS' grace,
Each poem crafted finds its place,
From mentors wise to minds anew,
In verse and prose, dreams pursue.

For in this haven, hearts entwine,
A tapestry of lives combine,
To shape tomorrow, brave and free,
In Kavya Manjari's jubilee.

Ajay Kumar
PGT (English)
PM SHRI KV Sector-8 Rohini

77

Viksit Bharat: A Vision Of Glory

In the heart of the East; where history meets,
Resounds a beat of Viksit Bharat's fleet.
With a vision so bright and a future that glows,
A tapestry of progress which perpetually grows.

From the wisdom of sages to the prudence of modern ages,
As we navigate through our pages in different stages.
From ancient roots to contemporary routes,
Together we march till we reach our pursuits.

In every field, we lead the way,
Science or Art or Technology's sway.
With minds that explore and hearts that care,
We craft wonders for all that dare.

From temples of knowledge to industries might,
We harness our potential soaring new heights.
The dawn of a new era with excellence as its tiara,
We continue to carve our name in the entire global game.

Unity in Diversity is our strength whatsoever,
In this our land it reigns forever.
Together we strive,Together we dream,
In our great Bharat where progress is the theme.

'VIKSIT BHARAT'a dream we aspire,
A Nation of amelioration,ignited by fire.
A beacon of hope for all the world to see,
Our Magnificent Nation of glory, strong and free.

Rachel Rajeeva K
PGT (English)
KV NAD Visakhapatnam

78

You Call Me a Teacher

I smile through your smile, I frown at your flaws;
I muse upon your memory, I glitter through your glow;
Piling your energy together, I sail, paddle, and row;
Toning your pace, I keep it gradual, lenient, and slow.

Might I sound bitter someday, might I seem rude to you;
It may be a displeasing lesson or some annoying thing I allude to;
Pure are my endeavors, not to dominate, not to intrude;
Never shall I intend to rule you, never wanting you to be subdued.
You call me a teacher, but I too learn along with your learning;
Sharing and tearing your fears apart, I too introspect on my own journey;
Your success lies in your dreams, my reward lies in your winning;
Was I able to awaken your soul, could I teach you to stand in harmony?
Did I paint on your persona, Majesty, Honesty, and a touch of empathy;
When needed, could I sense your sadness, sentiments, and delicate sensitivities;
Yes, I toil to guide you through all that is untouched;
Yes, I take pleasure in leading you along a dreadful path without getting crushed.

Neither do I long for luminous rewards, nor do I seek applause or praise;
Let me still be your guide and friend, let me be your well-wisher;
Let me be your helping hand.
Let me be your facilitator...
Let me be your facilitator.

Neha Kedia
PGT (English)
PM SHRI KV NMR JNU

79

And I Thought It Was Just a Job

To tell you the truth, dear readers, that's exactly what I thought;
That Teaching was just a job, and I, an employee, at the best:
So, when did the change begin, you may ask, an afterthought;
Well, when one of my many grateful students, told, if I may boast.

They talked, of persistent, dogged work, aimed at improvement,
Of the spoken and written word, in a town, where English still,
An alien concept and English newspapers were not yet meant,
To permeate the minds of the young, or fit the old reader's bill.

Or was it...When shopping in a crowded mall in the city, once,
I turned, to the sweet voice of an elegant lady, hesitant at first,
If it's Mrs. B...who taught English a decade back, perchance;
As I nodded smiling, I felt something shift in my heart's crest.

A rational person, I deduced, that if they still remembered,
With love and gratitude, after so many years; you did a good job;
Even though, it wasn't a job anymore, it has been nurtured,
For decades, with dedication; it had become more than any job.

And so now I know the truth, when a teacher teaches with love,
It is returned with affection great, and a deeply thankful heart,
From the young people you once taught, and their future thereof;
What a great journey it has been, both for the teacher and the taught.

Bindhu R. Mathew
PGT (English)
KV Embassy of India Kathmandu

80

A Teacher of the Millennia

A teacher I am, in this millennial age,
Guiding the bright, young Gen Z,
Their evolution outpaces mine,
Yet I ponder how to weave learning into their minds.

Knowledge flows through their veins,
But how do I nurture them into humans?
Eyes filled with hope turn to me,
As I strive to shape the future of our nation,
Yet within, I grapple

To create a better world...
Today, we speak of paradigm shifts,
Unaware of the seismic changes all around,
We wrestle with humanity's essence,
Striving to make our world worth living.

NEP 2020 captures my concerns,
But the challenge lies in its execution,
These children have entered the domain of machines,
And I fear they may one day become one.

I urge a conversation on our system's ethos,
To unite in our mission,
To mold these children into the compassionate beings
We all long to see in our lives.

Compassion, love, and respect are waning
In the chaos of life,
These children are our hope
In this critical time of renewal.

So let us teach with hearts ablaze,
Infuse their lives with wisdom's grace,
Guide them through the digital maze,
To find their place, to know their space.

For in these children lies our hope,
In every dream, in every scope,
To revive a world with love and care,
A future bright, beyond compare.

Mamta Shekhar
Principal
PM SHRI KV No. 2 Faridabad

81

Skin

I'm skin. I'm very clever.
I'd change colors and you
Wouldn't even know.
Sometimes, I'll define you
And your aspirations.
You won't get it but
I'll seep in, from the surface
To your mind.
Too dark, too light, too rough,
I'll never be enough.
And thus, I'll define you.
Don't let me.

I'd start off really mellow, soft, fresh
Into the bright new world.
Unafraid and ready,
I'll get bruises and bumps,
I'll turn blue-black
And all the other shades of
Life, misfortune, defeat, and dismay.
Without you realizing when,
Or knowing what to say,
I'll become a part of the ravages
Of the sun and the struggles and
Trying and failing and falling.

I'm a witness
Of your moments of weakness
As much as of your strength.
I saw what you did
When no one was looking.
I watched you trying to change me.

Into who I'm not. I watch you hide me,
But I'll remember it, and I'll remind you
Of what all I was, what all I can be,
Of what you are and what all you can be.
And even as you loathe the sight of me,
Even though you're more,
I am a part of you.
I'll define you. And
This time, let me.

Mansi Sharma
TGT (English)
PM SHRI KV No. 2 Vasco

82

Garden of My Heart

In the garden of life,
I plant seeds of hope and light,
Watch them grow with each sunrise,
Tender leaves reaching for the sky.
In the garden of my heart,
I nurture love and kindness,
Watered with tears and laughter,
Blossoming into a beautiful mess.
In the garden of my mind,
I weed out doubts and fears,
Replace them with faith and courage,
To bloom into dreams and cheers.
In the garden of my soul,
I find peace and harmony,
With roots deep in gratitude,
Blossoming into serenity.
In the garden of this world,
Let's sow seeds of compassion,
Tend to each other with care,
And watch love bloom in every fashion.
Let's tend to our gardens,
With patience, love, and light,
For in the end, we reap what we sow,
In the garden of life, pure and bright.

Surya S
TGT (English)
KV Konni

83

Keep It Clean

I envy lands far away,
Pristine lakes and pearls of sand.
I dreamt of this beautiful land,
Carpeted grass and tiled paths.

Why not here? I asked myself,
Change is needed, in thoughts and words
Keep it clean, keep it clean
Change is needed and we mean.

Who threw the wrappers all around,
Bits of papers and e-waste, that, I found,
Stains on walls and covers flying by,
Silver foils and Debris of plastic piling high
Ponds, Rivers and lakes turning dry,
Unheard are the feeble sounds of lands cry.

Keep it clean, keep it clean
Change is needed and we mean.
Start from home and leave no stone,
Until all the dirt is gone.

Pick the broom and the cloth,
As little hands moved back and forth,
Set the things straight and right
Each one to contribute their mite
Keep it clean, keep it clean
Change is needed and we mean.

P D Dally
TGT (Maths)
PM SHRI KV Tirumalgiri

84

Where Light Prevails

"In the realm of darkness, where shadows roam,
A glimmer of hope, a light begins to foam.
It spreads its wings, and shines so bright,
Illuminating all, banishing the night.

Where light prevails, love and joy reside,
Peace and harmony, side by side.
The darkness flees, as light takes its place,
Bringing warmth and comfort, to the human race.

In this radiant space, dreams unfold,
Hopes and aspirations, young and old.
The light guides us, through life's plodding way,
Leading us forward, come what may.

Where light prevails, the heart finds its home,
A sense of belonging, never to roam.
So let the light shine, let it fill the air,
And darkness will fade, without a trace or care.

Remember in the depths of your soul,
A spark of strength still glows.
So let the light, guide your way,
For every step forward is a new day.

Where light prevails, hope is reborn,
And the world awakens from deep slumber.
So when darkness flees, our hearts are free
To bask in the warmth, of pure ecstasy.

Tanu Khurana Tshering
TGT (English)
KV Moscow

85

Hope

When the world feels heavy and grey,
Hope brightens the darkest day.
With each sunrise, it gently shows,
A path where happiness grows.

Miracles happen due to hope,
It can take one from brink to top.
When uncertainty yells and mistrust tells,
That we cannot embark,
Hope murmurs through the dark.

Hope requires two things,
Patience, perseverance beaded in a string.
If you hope, you can achieve,
And from that day, your dreams will start to breathe.

Sweta Jainwal
TGT (English)
KV No. 1 Udhampur

86

A Child in Rags

Multiple things are planned for festivities,
Budgets are made to spend the rupees.
Social media gets flooded with clicks and tags,
But no one notices that child in rags.

Wardrobes are gifted with ample clothes,
Houses with over-lighting become storehouses of moths.
Somewhere in darkness, a soul sags—
The soul of that poor child in rags.

Money is considered to impress the Almighty,
Fruits and sweets are offered in vast variety.
Yet somewhere, there is a struggle for bread
In the hungry stomach of that child in rags.

Enormous funds are provided for education,
Lectures on uplifting literacy are a common occasion.
Still, a brain is deprived of school bags;
Earning a living is a must for that child in rags.

Some tender wishes are longing to be fulfilled,
Houses of love and kindness are yet to be built.
Some compassion can fulfill what he lacks—
Hopefully waiting for it is a child in rags.

Sonali Goel
TGT (Science)
PM SHRI KV No. 1 (OE) Tiruchirappalli

87

Be The One

Try to be the light for someone's dark sky,
Be the bird having the wings of hope to fly,
Tell someone dejected "Give it another try",
Seekers are so many, provided you identify.

Someone undergoing the moments of gloom,
Let your words be the kind flowers to bloom,
The distressed may not express, don't assume,
Ensure to fetch the moments of faith to illume.

Let your presence ignite the sparkles of smile,
Be gentle to the hurt heart with you, for a while,
If you can ease someone's pain, go that extra mile,
No work, done with a selfless heart, goes futile.

All are travellers here, destination being the same,
It's in the little wonders, that the joys we reclaim,
For the selfless deeds, let you be risen to the fame,
Let your name be carved in golden in the life's frame.

Preeti Shrivastava
PGT (English)
KV No. 3, ONGC, Surat

88

My Teaching Philosophy

When they speak as if
New butterflies measuring the sky,
Leaving their cocoons behind,
I call myself a teacher.

When they fall into grave silence,
Journeying through a story,
A land, or a character
That I paint with my words,
I call myself a teacher.

When they return
With their own pearls of wisdom
Gleaming in their eyes,
I call myself a teacher.

When the chalk is handed to
One among them,
And I switch my role
To an active listener,
I feel the presence
Of a teacher within me.

When others look down upon me,
The teacher of a noisy classroom,
I smile, for I know
Noise is creative.
Let them debate, let them discuss,
Let them create knowledge.
Yes, dear friends,
These are the reasons
I call myself
A teacher!

Soniya Joseph
PGT (English)
PM SHRI KV Hebbal

89

Youth Power (Youngistan)

Young and youthful Indian
Won't take anything for free...
Cheerful and Sprightly Indian
Will find dignity in paying bills.
For that all will agree.

When cost nothing...
Will cost country everything,
Things are valued,
When its product of hard Labour,
So
Let's show world, our calibre.

Make in India, Made for India
Nation of youth, a leader in you,
Sky is limit, dream and turns them true.
Creating opportunities, world to Gauze,
Let's India stand Head strong
Towards the same cause.

Students work hard for success
Parents strive hard for their progress
Players work hard for the glory and conviction
Warriors struggle for the nation's protection.

So come on, get up, Youngistan
Let's make a prosperous & developed Hindustan
That breaks Barriers of Caste, creed and Race
Where only Hard work, patriotism and Nation First-Prevails

Take the world by storm,
With innovation & reforms.
Work towards new India, Digital India.
This decade is ours,
Die hard to reach the stars.

Rashmi Jain Bayati
Headmistress
PM SHRI KV No. 1 Shahibaug

90

Spring: An Anthem

Spring... Season for good hope, good days
To rekindle faith in us and others
Sparkling waterfalls and children's laughter
Symphonies with sunshine and greenery.

Blooms and bliss in ambience bright
To slide away the dark months gone
Brings the smile back to everyone
When Mother Earth appears her prettiest.

Season... symbol of childhood
Warmth of sun mirth of rain
Nourishes mind, body and soul
Of men, women, old and young.

Time for get-togethers, merry days
Brings together each of us
Faith, views, dialects don't matter
Nature's bounty makes men mindful!

Anyway, hope's the reason
That keeps us going,
Dark could last till dawn only
Spring keeps coming, year after year!

Sindhu K M
PGT (English)
PM SHRI KV, KPA, Ramavarmapuram

91

Garden of My Life

In the garden of my life,
With drizzling tears,
I saw a grey rainbow
Behind the large dry meadows.

I smelled the faded roses
And approached the oasis of my solitude.

I drenched in deep grief
And cried as loud as I could,
Hoping the pain would vanish and give me some relief.

I recollected all my strength,
Ploughed my barren, thoughtful land,
And waited for the first rain of happiness.

With my naked eyes, I witnessed
Beneath the cracked and dry land
A tiny red rose blooming, to my surprise,
In the garden of my life.

Deepa Virmani
PRT
KV AFS Bareilly

92

A Door To Destiny

Some open it for pleasure, some for wisdom,
Some are careless, some build the kingdom.
If you try with trust mingled with tenacity,
The door will open, and reflect your sagacity.

It's not a mere door of wood and iron,
To open it not many bones are broken!
Ancient as our ancestors, it stands still,
Waiting for the interest, wisdom, and skill.

Do you know what lies on the other side?
If the door is open, you may feel pride.
The treasures of all noble thoughts and deeds,
What can make you immortal and quench all needs.

Luck is locked in the letters of black,
May make you bright, shining in dark.
Untie the knots of knowledge with a curious mind,
The soaring success, and the fortune, you'll find.

The secret of the door, am I to reveal?
It's only a good book, the sense you must feel.
The doors are nothing but the pages of the book,
The key to peace and success, for what we look.

Sameer Kumar Kalas
TGT (English)
PM SHRI KV No. 5, Kalinga Nagar

93

Modern Halls of Knowledge

In modern halls where knowledge once did gleam,
Now shadows cast, as standards strain and bend,
Where tests and grades define a student's dream,
And true learning seems a means to an end.

Technology's advance, a double-edged sword,
Connects us all, yet pulls us far apart,
Information floods, yet wisdom ignored,
In screens we seek, yet miss the human heart.

But teachers, steadfast, light the guiding flame,
In classrooms filled with hope and youthful spark,
They nurture minds, beyond the testing game,
Where love of learning finds its beating mark.

So let us strive to mend the broken seams,
And reignite the essence of our dreams.

Rattan Singh
PGT (English)
KV NTPC Shaktinagar

94

Mending Away

Pain, sounds very ruthless,
Pain, that actually elevates.
Moment by moment by moment,
Captures the dew drops of heart
Seen sometimes, sometimes speechless.
But, it actually elevates.

The deep breathing, the endless moonbeam;
Turns into a pale shadowy rubrics.
It wears the mask of vigour
In front of the procession of happy choir.

The wet pillows, the unmoving clock tower
Pay hid to naught.
But, in heart of hearts
Resolution sounds its whistle-
'Get up and have a new start'.

Now the hurt takes healing potion
And rises up to get a new motion.
Thus, hope enkindles and beckons the path.
The journey starts and never to look back.

Mou Bhattacharjee
TGT (English)
KV Ambassa

95

My KVS My Pride

In hallowed halls of learning, we stand tall and proud,
Kendriya Vidyalaya Sangathan, our noble crowd.
A beacon of excellence, shining bright and true,
Guiding young minds, our mission, through and through.

With passion and dedication, we nurture and guide,
The future of India and our students, side by side.
From diverse backgrounds, they come to our door,
United in knowledge, forever more.

In classrooms abuzz, with curiosity and delight,
We ignite the spark, of discovery and light.
Our lessons go beyond, the confines of a book,
Empowering young hearts, with values to hook.

With every triumph, our pride knows no bounds,
Our students soar high, on wings of knowledge found.
We celebrate each step, of their journey so grand,
Molding citizens, of a brighter land.

Kendriya Vidyalaya Sangathan, our badge of honour true,
A symbol of unity, in all we do.
With head, heart, and hand, we pledge anew each day,
To shape the future, in a brighter way.

So here's to our students, our joy and our pride,
And to our noble institution, where knowledge resides.
May our legacy continue to inspire and ignite,
The love of learning, a beacon shining bright!

Dr. Sayyada Aiman Hashmi
PGT (English)
PM SHRI KV Andrews Ganj

96

Whisper of Dawn

In the quite whispers of Dawn's first light,
Dreams unfurl, embracing the night,
Gentle hue of rose and gold,
Stories of the morning softly told.

The world awakes in the tender grace,
Morning due on every face,
Birds sing sweet, a chorus true,
Greeting the day, fresh and new.

The breeze carries tales untold,
Of love and hope, brave and bold,
Mountains stand, silent and grand,
Guardians of the timeless land.

To this moment, pure and bright,
Find your strength, embrace the light,
From every dawn a chance to start,
A new beginning, a hopeful heart.

Mamta
TGT (English)
PM SHRI KV No. 2, Vijaywada

97

To Kill a Girl Child

Mother,
There Are Many Ways to Kill a Girl Child
Catch her sleeping
In amniotic bliss—
When she is nothing more than a beating heart.
Suck her out, or burn her hot,
Cut her, chop her, limb by limb.
And if the writhing mother dies,
It's just another woman dead,
Making way for a new one to bed.
But if, like a roach, she wriggles out
Of your wretched, reeking womb,
Choke her with a husk of rice,
Or wrap her wet under a whirring fan
And watch her shiver off to doom.
Or dump her in a faraway garbage heap
For lusting dogs
And loathing creeps.
But if bigger your heart and broader your mind,
Then load her with degrees and dowries too,
For her man will be as degreed as she.
Teach her, but educate her not,
Nurture her as another's child
And give her away over a crackling fire.
Then, wipe your tears and dust your hands,
Until you see her charred in another fire.
And if no fire will char her skin,
Let the fire char her will.
Shut your ears when she complains,
Close your eyes when she crumbles,
And then she will learn how to die.
And if the wretch dares to live,
Disown her from your hearth and heart—
Homeless, loveless, she will die.
Mother,
There are so many ways to kill your girl child.

Sreeja Nair
PGT (English)
PM SHRI KV, Malappuram

98

Let It Go

You cannot force love,
No matter how hard you try.
No heart will truly melt
Just because you cry.

If you truly love someone,
Teach yourself to quit
When all your fathomless feelings
Go brutally unrequited.

Is not love eternal,
Unconditional in its mien?
Then let it go if it must—
Unheard, unspoken, unseen.

Fasten your cords of amour
With just your loving core,
For love, in course, will teach you
To want that and nothing more.

Jhanjha Chakravarty
PGT (English)
KV No. 3 Delhi Cantt

99

My Bird is Flying High

My bird is flying high, even higher than the sky…
She has to fly high as there is no limit to the sky…
She has to open her wings and close her eyes to feel this endless sky…
My bird is flying high, even higher than the sky…
Her dream is blue, which is much deeper than the sea and not less than the sky…
There is no limit to her sacrifices, as her wings are too short but wills are too strong,
Strong even stronger than thunderstorms in the sky…
My bird is flying high, even higher than the sky…
To fly her dreams she reached in the blue sky…
She has come to know that her steadfast power is higher than this high sky…
My bird is flying high, even higher than the sky…

Ankit Gupta
PGT (Chemistry)
PM SHRI KV No.1 GCF Jabalpur

100

Education's Gift

In the heart of darkness, a light does gleam,
A beacon of knowledge, a timeless dream.
Education, the key to unlock the mind,
Opens the doors to treasures we find.

From ancient scrolls to digital page,
It bridges the gaps, transcends the age.
With wisdom's whisper and learning's might,
It chases away the shadows of night.

In every question, an answer awaits,
A journey of growth that never abates.
It moulds our spirit, sharpens our sight,
Guides us to truth, from wrong to right.

Education's gift is a sacred call,
The greatest treasure, given to all.

Mansi Hathi
TGT (English)
PM SHRI KV Tirumalagiri

101

Guardian of Pearl

Life changed when I lost him,
Its charm vanished, leaving me alone.
He taught me how to smile and walk,
His words still echo in my mind.

Though now he dwells in a heavenly abode,
Floating like a mayflower,
Softened by fresh memories.

He never let me bow to the heartless,
Nurturing me like a precious pearl,
With nothing but hope.

He believed hard his hope wouldn't be in vain,
Trusting his pearl more than the gods he revered.
He stood as a barrier between his pearl and hunters,
Protecting her until his last breath.

Pramitha P
TGT (English)
PM SHRI KV Nileshwar

102

Three Decades in KVS - The Acme Point

Tender, gentle, innocent eyes
Holding Dad's hand, entered the Principal's chamber.
Bewildered looks,
Yet heart filled with elation
At the thought of kick-starting my career, a professional
A teacher in the prestigious KVS.
Warm, welcoming smiles greeted the duo.
Then the plunge into work began…
A wonderful, energizing arena where the transformation began,
Then gifted with many magical wands and magic gowns to suit the multitasking…
A teacher's magic wand to strengthen academics,
Another wand to sharpen skills—
Be it dance, communication, singing, and the like.
Another magical gown to transform into a superwoman,
A manager in marketing, HR,
A counsellor, a nurse, a choreographer, a musician.
I thought I was here to transform and guide a child.

K.S. Soujanya Singh
PGT (English)
KV No. 2 Nausenabaugh

103

World is Within

I was at the zenith of my freedom
When I was welcomed to this world—
Eyes all absorbed and fists clenched tight.
I knew that I need not look at others,
No matter if one praises or criticizes;
The power to control myself is within me,
Neither in one's dangling support nor in staring eyes.

But as my eyes opened, each bit of strength and will
Started turning as dead as the things in white.
Mind and body were guided by altered expectations,
As the inner serene light gradually diminished.
Dresses were worn but not ones I liked,
And targets chosen in a blind race but never struck.
Control was still alive but no longer mine,
As I never once considered the 'who' and 'what' of myself.

Closing the eyes was a difficult task,
As it had guided me away from my plight,
And pushed me towards the urgency
Of finding that long-lost inner light.

So, I worked on that inner eye and ensured
It remained in its meditation, sound and pure,
Guiding every decision of my life,
Keeping me away from distraction, threat, or lure.

It is good to be lost for some time,
But on the condition that there remain chances
To return as a better self,
With deeper insight and greater self-awareness.

For that, one needs to keep the inner light safe,
Nourishing it all the way, wherever one goes.
Not a single person exists in this world who cannot find that light; if found, here I stand.

Prashant Kumar Pandey
TGT (English)
PM SHRI KV No. 1, Tiruchirappalli

104

Positive Mindset

The source of all rich waves is an open mind.
Let yourself be like the open sky,
Although it is not revealed, but secretly.

Gratitude is the key to maintaining relationships.
Allow yourself to be grateful always,
Although not much expressed in words, but silently.

Competing with yourself relieves ego.
Let yourself to be your own competitor,
Although not with others but with yourself surely.

Consciousness is the symbol of a healthy society.
Allow yourself to be sensitized slowly,
Although it is not early, but surely.

Compassion is greater than sympathy.
Let yourself to be empathetic.
Although it is not verbally, but soundlessly.

Understanding is more worthwhile than adjustment.
Allow yourself be discerned.
Although it is not constantly, but sometimes noiselessly.

Moumita Shyamal
PRT
KV Ernakulam

तत् त्वं पूषन् अपावृणु

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

Kendriya Vidyalaya Sangathan

18, संस्थागत क्षेत्र, शहीद जीत सिंह मार्ग, नई दिल्ली-110016

18, Institutional Area, Shaheed Jeet Singh Marg, New Delhi-110016

https://kvsangathan.nic.in/ | @KVSHQ | @KVS_HQ | @kvshqr | KVS HQ

स्वच्छ भारत

एक कदम स्वच्छता की ओर